ॐ

जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

2024

जैविक औषधि

होली मिलन–2023 की झलकियाँ

अध्यक्ष जी और अतिथिगण

अध्यक्षीय संबोधन

सम्मानीय मुख्य अतिथि

कान्यकुब्ज वाणी 2023 का विमोचन

छात्राओं को पुरस्कार

ॐ आदित्यायविद्महेमार्त्तण्डायधीमहितन्नः सूर्य प्रचोदयात्॥
(मुझे दिन के निर्माता सूर्य देव का ध्यान करने दो, मुझे उच्च बुद्धि दो और भगवान सूर्य को मेरे मन को रोशन करने दो।)

विषय सूची

1.	आवरण कथा : क्या है 'बायोलॉजिक्स' यानि जैविक दवायें? - कीर्ति चतुर्वेदी	3
2.	गेहूं घास : एक अद्भुत औषधि - डॉ. अनुराग दीक्षित, डॉ. सुप्रिया दीक्षित	7
3.	बच्चों की अभिरक्षा - अशोक कुमार चौधरी	11
4.	Remembrances-I : D.N. Dubey	13
5.	Time Will Roll Back - Dr. Anil Mishra	17
6.	The Gomti - Our Identity : Divya Shukla	19
7.	आयुर्वेद के स्वास्थ्य सूत्र संस्कृत और अंग्रेजी में - वैभव शुक्ला	20
8.	Ayurvedic Treatment for Neck Pain - Dr Anurag Dikshit, Dr Supriya Shukla Dikshit	23
9.	लोक साहित्य में श्रीराम - डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी	29
10.	चिकित्सा विज्ञान में द्वैत और अद्वैत - डॉ. डी.एस. शुक्ला	35
11.	कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्रीकान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा 2024	39
12.	दोहे - डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी	40
13.	वसुधैव कुटुंबकम - मुक्ता द्विवेदी	41
14.	माँ, पत्नी - डॉ. दिनेश चन्द्र अवस्थी	42
15.	वर्ष 2023 होली मिलन में सहयोग करने वालों के नाम	43
16.	मंच पर पुरुस्कार पाने वाली छात्रायें	44
17.	कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल	45
18.	एक ग़ज़ल - इंदु प्रकाश द्विवेदी	50
19.	संदेशखाली और महाराष्ट्र का कस्तूरबा नगर - डॉ.डी.एस. शुक्ला	51
20.	आपराधिक अन्वेषण में डी एन ए परीक्षण - तिलक शुक्ला	54
21.	एक श्राप तो.... - विनीता मिश्रा	62
22.	एक और आहुति - महेश चन्द्र द्विवेदी	64
23.	अतवरिया का हँसिया - डॉ. अनिल मिश्र	66
24.	कैंसर व्याधि में जीन्स का महत्व - डॉ. ज्योति बाजपाई दीक्षित	71
25.	श्रद्धांजलि	76

क्या है 'बायोलॉजिक्स' यानि जैविक दवायें?

- **कीर्ति चतुर्वेदी,** PhD, Iliyonis, USA

कुछ साल पहले, मैं फेसबुक पर अपने एक सहपाठी से जुड़ी और फिर हाल ही में उसे व्यक्तिगत रूप से देखने का मौका मिला। जब हम मिले तो उसने मुझे बताया कि वह लंबे समय से गठिया रोग (रूमेटीइड अर्थीरिट्स) से पीड़ित है और कुछ आयुर्वेदिक दवायें आदि ले रही है क्योंकि कोई भी केमिकल-आधारित दवा उसे राहत नहीं दे रही थी। मैंने कहा, इन दिनों नई बायोलॉजिकल दवाएं अथवा बायोलॉजिक्स आ गयी हैं जो गठिया जैसी ऑटो इम्यून बीमारियों के इलाज के लिए अच्छी हैं, आप कुछ क्यों नहीं आजमाती। उसे संदेह था जिसे मैं पूरी तरह से समझती हूं, हालांकि उसके बाद उसने दिल्ली के प्रसिद्ध अस्पतालों में से एक में जाने का फैसला किया, उसकी स्थिति का इवैल्यूएशन करने के बाद डॉक्टर ने एक बायोलॉजिकल मेडिसिन प्रेस्क्राइब की। कुछ महीनों बाद, उसने मुझे बताया कि वह काफी बेहतर महसूस कर रही है और बिना दर्द के चल-फिर सकती है और अपनी दैनिक प्रक्रियायें कर सकती है।

मुझे एहसास हुआ कि वह अकेली नहीं थी जो झिझक रही थी, मैंने एक अन्य मित्र से भी सुना था कि मल्टीपल स्केलेरोसिस के कारण किसी की मृत्यु हो गई और उसने डॉक्टर के कहने पर भी बायोलॉजिकल दवाओं को आजमाने से इनकार कर दिया था। इस लेख के माध्यम से मैं इन नई दवाओं के बारे में बहुत ही सरल भाषा में जानकारी प्रदान करने का प्रयास करूँगी।

बायोलॉजिकल मेडिसिन जिन्हें "बायोलॉजिक्स" कहा जाता है, रासायनिक/केमिकल दवाओं से भिन्न होती हैं क्योंकि वे रासायनिक प्रक्रिया के माध्यम से नहीं बल्कि कोशिकाओं (सेल्स) द्वारा निर्मित होती हैं। फार्मास्यूटिकल्स के इस वर्ग को वैज्ञानिकों द्वारा डीएनए के रूप में डिजाइन किया गया है, और फिर जीवित कोशिकाओं में डीएनए कोड के अनुसार प्रोटीन/मेडिसिन को प्रोड्यूस किया जाता है। यह सब प्रोडक्शन-प्रोसेस इन-विट्रो (कृत्रिम-परिवेश) में होती है। यह मेडिसिन्स ज्यादातर प्रोटीन होते हैं। कुछ मामलों में, कोशिका/सेल को ही

चिकित्सा के लिए उपयोग किया जा सकता है, उदाहरण के लिए स्टेम सेल थेरेपी और टी-सेल थेरेपी (टी-सेल प्रतिरक्षा कोशिकाएं हैं)। आप सोच रहे होंगे कि कोशिका में उत्पादित प्रोटीन को मानव शरीर कैसे अस्वीकार नहीं करता, क्योंकि हमारा इम्यून सिस्टम तो फॉरेन बॉडी को रिजेक्ट कर देता है। आप सही हैं, एक तरकीब है, ये प्रोटीन या तो मानव प्रोटीन की पूरी प्रतिकृति होती हैं या उनमें मानव प्रोटीन का हिस्सा होता है ताकि इम्यून सिस्टम इनको फॉरेन बॉडी न समझे।

अधिकांश रासायनिक/केमिकल दवाएं छोटे अणु (लगभग 180 डाल्टन) है और अवरोधक/इन्हिबिटर के रूप में कार्य करती हैं- जैसे एस्पिरिन की दर्द कम करने की शक्ति शरीर में साइक्लोऑक्सीजिनेज नामक एंजाइम को बाधित/इन्हिबिट करने की क्षमता से आती है, जो दर्द संकेतन में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। हालांकि छोटे रसायनों को आसानी से अबजोर्ब किया जा सकता है और यह कोशिकाओ के अन्दर आसानी से जा सकती है लेकिन वे कोशिकाओ के असम्बन्धित भागों को भी प्रभावित कर सकते हैं जो उन्हें नॉन स्पेसिफिक बनाता है। दूसरी ओर, बायोलॉजिकल दवाएं बड़े अणु (100-150 किलो डाल्टन) होती हैं लेकिन अधिक 'लक्षित' दवाएं होती हैं जो 'निर्धारित स्थान पर जाती हैं' और उस मॉलिक्यूल से कनेक्ट होती हैं या उसकी प्रक्रिया को ब्लाक करती हैं जो उस बीमारी के रोगजनन में शामिल होता है। इस तरह से यह स्पेसिफिक थेरेपी का काम करती है। उदाहरण के लिए- रूमेटीइड गठिया रोग में टीएनएफ-α (टीएनएफ-α साइटोकाइन- एक प्रोटीन/कारक जो इम्यून सेल्स द्वारा प्रोडूस होता है) का उच्च स्तर पाया जाता है। रूमेटीइड अर्थीरिट्स में शरीर अपने शरीर के ही प्रोटीन के खिलाफ में एंटीबाडी बनाने लगता है, और टीएनएफ-α इस प्रक्रिया बढ़ने में इम्यून सिस्टम की मदद करता है। अगर इस साइटोकाइन की एक्टिविटी रोक दी जाये तो बीमारी को दबाया जा सकता है। इस साइटोकाइन का ऊंचा स्तर ऑटोइम्यून बीमारियों में आम है (ऑटोइम्यून रोग वह स्थिति है जब शरीर अपने स्वयं के प्रोटीन के खिलाफ प्रतिक्रिया करता है)। वैज्ञानिकों ने एक बायोलॉजिक्स/प्रोटीन डिजाइन किया है जो विशेष रूप से टीएनएफ अल्फा से बंधता है और इस साइटोकाइन की गतिविधि को दबा देता है। इस तरह से हर मेडिसिन की एक कहानी है और स्पेसिफिक कार्यवाही की प्रणाली है। Humira (हुमिरा) नाम की दवा एक ऐसी

ही दवा है जो कि 2018 की अमेरिका में अब्वी (Abbvie) कंपनी की ब्लॉकबस्टर ड्रग थी। यह गठिया रोग के अलावा दूसरे आटोइम्यून रोगों के उपचार के लिए भी दी जा सकती है।

बायोलॉजिकल दवाये काफी दशकों से हैं, चिकित्सीय उपयोग के लिए स्वीकृत पहला बायोसिंथेटिक 'मानव' इंसुलिन था जो पुनः डीएनए (रेकोम्बिनेंट डीएनए टेक्नोलॉजी) के माध्यम से बनाया गया था। यह पहली बार जेनेंटेक (Genentech, यूएसए की कंपनी) द्वारा विकसित किया गया था, लेकिन एली लिली एंड कंपनी (Eli Lilly, यूएसए की कंपनी) को लाइसेंस दिया गया था, जिसने 1982 में इसका निर्माण और वितरण शुरू किया था। इंसुलिन और ग्रोथ फैक्टर इत्यादि जो अब काफी प्रचलित हैं, इनकी संरचना सरल होती है और इन्हें बैक्टीरिया में उत्पादित किया जा सकता है, जबकि नई पीढ़ी के बायोलॉजिक्स स्तनपायी (mammalian) कोशिकाओं के अंदर उत्पादित होते हैं। 2011 से अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफ डी ए) ने ल्यूपस, क्रोहन रोग, संधिशोथ, मल्टीपल स्केलेरोसिस, गुर्दे की विफलता, अस्थमा और हाई कोलेस्ट्रॉल के उपचार के लिए नए प्रोटीन-आधारित बायोलॉजिक्स को मंजूरी दी है। 2015 में कैंसर के लिए एक बायोलॉजिकल दवा को मंजूरी दी गई थी, यह दवाओं को इम्मुनोथेरापयूटिक्स Immunotherapeutics भी कह सकते हैं। उनके बाद से वैज्ञानिकों ने विभिन्न तरह के कैंसर के लिए इम्यूनोथेरेपी विकसित की है। कभी-कभी इनका उपयोग कीमोथेरेपी के साथ किया जा सकता है, और अकेले भी किया जा सकता है। कीमोथेरेपी के बहुत सारे दुष्प्रभाव होते हैं और यह बहुत स्पेसिफिक भी नहीं है, आशा है कि वर्तमान कैंसर उपचार को प्रतिस्थापित करने के लिए जैविक दवाएं ज्यादा उपयोग में लायी जाएँगी।

डॉक्टर तो केवल दवा लिखते हैं, लेकिन वैज्ञानिक समुदाय को कम से कम 7-8 साल का समय लगाना पड़ता है इस तरह की दवा बनाने के लिए। सबसे पहले ड्रग का डिजाईन फिर उसके बनाने प्रक्रिया, प्रभावकारिता सुरक्षा की जांच, क्लिनिकल ट्रायल्स, रेगुलेटरी अप्रूवल और उसके बाद बायो-मैन्युफैक्चरिंग कंपनी द्वारा विनिर्माण, इन सबमें बहुत खर्चा होता है और इसलिए कोई भी नयी दवा बहुत महंगी होती है। यही नहीं बायोलॉजिक्स के उत्पादन और शुद्धिकरण की प्रक्रिया एक महीने से अधिक लंबी है और एक मरीज को दवा की 1 मिलीलीटर से भी कम खुराक देने के पहले बहुत सारे नियामक दस्तावेजों से भी

गुजरना पड़ता है। इन दवाओं को अफोर्डेबल बनाने के लिए भी काफी तरीके ढूंढ़े जा रहे हैं।

वर्ष 2020 तक कई प्रमुख बायोलॉजिक्स का पेटेंट खतम हो गया है, जिससे अन्य बायो-फार्मास्युटिकल कंपनियों को समान बायोलॉजिक्स या बायो-सिमिलर (जेनेरिक बायोलॉजिक्स) को विकसित करने का अवसर मिला। 2000 की शुरुआत में पहले बायो-सिमिलर के अनुमोदन के बाद हाल के वर्ष में बायो-सिमिलर का उपयोग बढ़ गया है। भारत बायो-सिमिलर के अग्रणी निर्माताओं में से एक है। भारत ने बायो-सिमिलर के अनुमोदन के लिए 2012 में एक नया दिशानिर्देश विकसित किया है। भारत में आज विविध रोगों के लिए इस तरफ की दवायें उपलब्ध है। गठिया के लिए एडफर, रेक्टल कैंसर के लिए क्राबेवा और हर्सेप्टिन, और न्यूट्रोपेनिया के लिए ग्राफील भारत में स्वीकृत बायो सिमिलर के कुछ उदाहरण हैं (रिफरेन्स)। बायो सिमिलर की मदद से यह नयी मेडिसिन्स अब ज्यादातर लोगों को आसानी से और कम दामों में मिल सकती है, फिर भी केमिकल मेडिसिन से ज्यादा महंगी है। हालांकि वैज्ञानिकों की कोशिशें जारी हैं, इनको ज्यादा अफोर्डेबल और इकोनोमिकल बनाने की।

हर दवा का साइड इफेक्ट होता है और कोई भी दवा चमत्कार नहीं होती लेकिन आपको डॉक्टरों और वैज्ञानिकों पर विश्वास करना होगा और अगर फिर भी झिझक हो तो उनसे इन दवाओं के बारे में पूरी जानकारी मांग लें लेकिन मना न करें।

Source: #International Journal of Pharmaceutical and Bio-Medical Science ISSN (print): 2767-827X, ISSN(online): 2767-830X Volume 03 Issue 09 September 2023 Page No: 495-500

•

गेहूं घास : एक अद्भुत औषधि

डॉ. अनुराग दीक्षित
एम.डी. (आयु.)
पंचकर्म (आयुर्वेद) चिकित्सक
सहारा अस्पताल, लखनऊ
मो.: 9415335166

डॉ. सुप्रिया दीक्षित
एम.डी. (आयु.)
आयुर्वेद चिकित्सक
आयुर्वेदिक रिमिडीज

गेहूं की घास, अंग्रेजी में इसे 'व्हीट ग्रास' कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि अनेक रोगों में जब अन्य चिकित्सकीय योग लाभकारी नहीं होते हैं, तब गेहूं की घास ही लाभप्रद होती है।

गेहूं की घास एक शक्तिवर्धक एवं पौष्टिक आहार है जोकि उच्च ऊर्जा प्राप्त करने तथा रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने का मुख्य स्रोत है, क्योंकि यह अनेक मिनरल एवं विटामिनों का भण्डार है। यह शक्तिशाली Antioxident है तथा इसमें Antibiotics एवं Anti-inflammatory विशेषताएं भी विद्यमान हैं तथा इसमें अनेक रोगों विशेषकर चिरकालिक रोगों से लड़ने की क्षमता होती है। यह नजला जुकाम, अन्तरिक रक्तस्रावगत अनीमिया, विबन्ध, डायबिटीज, कुष्ठ विशेषकर अग्निदग्ध अवस्था, एवं वृक्क शोथ में विशेष रूप सें कारगर है। यह घास कैन्सर जैसे खतरनाक रोग का उपचार भी है।

गेहूं घास के नूतन अंकुर क्लोरोफिल का प्रचुर स्रोत है, इसके पंचांग के स्वरस को लीक्विड क्लोरोफिल भी कहते हैं। इस प्रचुर मात्रा में उपलब्ध क्लोरोफिल से शरीर में हीमोग्लोबिन का उत्पादन बढ जाता है, इस प्रकार अनीमिया रोग में सहायक औषधि है। इस घास में प्राप्त मैग्नीशियम शरीर में उत्पन्न होने वाले करीब 30 इन्जाइमों को एक्टीवेट कराने में मदद करता है। इसमें प्राप्त विटामिन ई ह्रदय के लिये लाभकारी है एवं विटामिन बी 17(laetrile) कैन्सर की एकमात्र औषधि है।

इस घास के स्वरस की रासायनिक संरचना शरीर में प्राप्त हीमोग्लोबिन से बहुत मिलती है। एक चम्मच घास के स्वरस में 10-15 कैलोरी होती है एवं इसमें वसा एवं कौलेस्ट्राल नहीं पाया जाता है। मानव शरीर पर इसके प्रमुख प्रभाव हैं। रक्त शोधन, यकृत शोधन एवं वृहद् आंत्र शोधन। इसमें विटामिन ए, बी, सी, ई एवं के तथा कैल्शियम, पोटैशियम, आइरन, सल्फर तथा 17 प्रकार के अमीनो एसिड पाये जाते हैं।

गेहूं घास की विशेषताएं

शीतवीर्य, स्नेहन कर्म, सुपाच्य, रसायन, ऊर्जादायक, वात व पित्तशामक, मधुररस, पथ्याहार, वातरोगों को नष्ट करने वाला, फाईबरयुक्त, मलशोधक व मधुमेह में उपयुक्त है।

गेहूं घास के लाभ

1. रक्त रंजक तत्वों (Haemoglobin) को बढ़ाता है।
2. रक्त के शोधन व निर्माण में सहायक है।
3. शरीर की घाव भरने की क्षमता में वृद्धि करता है।
4. शरीर में उत्पन्न होने वाले तथा जमा हुए विषैले तत्वों का निर्विषीकरण (Detoxification) करता है।
5. यकृत शोधन करता है।
6. पाचन शक्ति का सुधार करता है।
7. शरीर में एकत्रित भारी धातुओं को हटाता है।

गेहूं घास के अन्य लाभ

1. विटामिन A: नेत्र रक्षा में सहायक तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है।
2. विटामिन B2: भोजन में संचित ऊर्जा को शरीर में उपलब्ध कराता है, जोकि शरीर की प्राकृतिक वृद्धि व विकास हेतु आवश्यक है।
3. विटामिन C: यह हृदय रोगों से रक्षा करता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। व्रणरोपण का कार्य करता है, तथा संयोजी उत्ताकों में कोलैजिन निर्माण में सहायक होता है।
4. विटामिन D: रक्त में कैल्शियम की सामान्य मात्रा को बनाए रखता है तथा उसके अवशोषण में सहायक है।
5. विटामिन K: अस्थि तथा रक्त के प्राकृतिक कार्यों के संचालन में सहायक है।
6. कैल्शियम : दांतों तथा हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है, रक्त रोधन में सहायक है, प्राकृतिक मांसपेशी संकोचन प्रक्रिया में तथा स्नायु कोशिका संचारण में सहायक होता है।

7. Iron : Bone Marrow में रक्तरंजन (Hb) तत्वों के उत्पादन में सहायक है।

8. K : Fluid Electrolite संतुलन बनाये रखता है।

गेहूं घास उगाने की विधि

1. प्रथम यह निर्धारित करें कि कितना गेहूं घास उगाना है, उसी अनुसार एक बर्तन का चयन करें।

2. बर्तन में आर्गेनिक खाद युक्त मिट्टी को भरकर उपर का 1/4 हिस्सा छोड दें ताकि बीजों को ढकने के लिये पर्याप्त स्थान रहे।

3. इस मिट्टी को नमीयुक्त करने हेतु पानी से पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करें, साथ ही ध्यान रखें की पानी बहुत ज्यादा नहीं होना चाहिए।

4. इस बर्तन को किसी गर्मी युक्त अंधेरे स्थान पर रख दें।

5. अंकुर फूटने की शुरुआत होते ही इसे सूरज की रोशनी में रख दें, साथ ही यह सुनिश्चित करें कि मिट्टी में पर्याप्त नमी रहे।

6. चार दिनों में अंकुर फूटने लगते हैं, तथा जब यह 4-6 ई. लम्बे हो जाएं तब यह काटने योग्य हो जाते हैं।

7. अंकुर प्राकृतिक रूप से 14-20 दिनों के अन्दर परिपक्व होकर मुर्झा जाते हैं।

8. घास उगाने का क्रम निरन्तर चलता रहना चाहिये। हर सप्ताह नए बर्तन में नवीन घास उगाने से यह क्रम निरन्तर बना रहता है जिससे कि प्रयोग के लिये हमेशा घास उपलब्ध रहती है।

9. अपशिष्ट मिट्टी को अपने घर में वानस्पतिक खाद भण्डार में जैव अपघटन हेतु संग्रह करें। यह मिट्टी पुनः उत्पादन में प्रयोग की जा सकती है।

प्रयोग विधि

सामान्यतः गेहूं घास का प्रयोग स्वरस के रूप में होता है। स्वरस निकालने हेतु सबसे पहले गेहूं घास को काट कर धोना चाहिये तथा इसे मिक्सर ग्राइन्डर वा सिलबट्टे की सहायता से पीसने के उपरान्त साफ महीन कपड़े में रखकर निचोड़ने से स्वरस निकल आता है।

गेहूं घास की औषधि मात्रा

- स्वास्थ्य संरक्षण हेतु इसके स्वरस की सामान्य मात्रा 25-50 मि.लि.।
- रोग नाश हेतु चिकित्सकीय मात्रा 150-250 मि.लि.।
- इस स्वरस को प्रातः खाली पेट सेवन करना चाहिये।

हानिकारक प्रभाव

1. इस स्वरस के प्रथम प्रयोग अथवा इसे खाली पेट न लेने से कुछ लोगों में मिचली की शिकायत पायी जाती है।

2. प्रथम बार अथवा अधिक मात्रा में इसके सेवन से कई लोगों में दस्त की शिकायत भी पायी जाती है।

बच्चों की अभिरक्षा

– **अशोक कुमार चौधरी,** (अ.प्र.) जिला न्यायाधीश

नैनीताल में न्यायाधीश के रूप में कार्य करते समय बच्चों की अभिरक्षा देने के सम्बन्ध में एक प्रकरण मेरे सामने आया, जिसमें पिता ने अपने 4 वर्षीय बेटी एवं 6 वर्षीय बेटे की अभिरक्षा उसे सौंपने का आग्रह किया था जो अपने बूढ़े नाना-नानी के साथ न्यायालय आए थे और कौतूहल के साथ सब कुछ देख रहे थे। नानी-नानी सहमे से सशंकित थे कि पता नहीं, बच्चे किसकी अभिरक्षा में सौंपे जायेंगे। पिता की ओर से कहा गया कि उसके अबोध बच्चों की देखभाल बूढ़े नाना-नानी नहीं कर सकते और न उन्हें अच्छी शिक्षा व स्वस्थ पारिवारिक वातावरण दे सकते हैं।

नाना-नानी की ओर से बताया गया कि बच्चों के पिता ने उनकी माँ को जिंदा जलाकर मार डाला था और वे बच्चे इतने डरे-सहमे हैं कि पिता के साथ जाना नहीं चाहते तथा वे स्वयं अपने नाती-नातिन को पालने में सक्षम हैं और उनकी देखभाल कर सकते हैं। न्यायालय अवयस्क बच्चों की अभिरक्षा के संबंध में उनके हितों को दृष्टिगत रखते हुये निर्णय करने के लिए सक्षम है। प्रकरण की गंभीरता देखते हुए मैंने पति से पूछा कि क्या उसने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी शादी कर ली है जिससे उसके कोई संतान नहीं हुई है और इसी वजह से वह बच्चों को ले जाना चाहता है।

वह बोला कि पत्नी की हत्या के अपराध में वह न्यायालय से बरी हो चुका है। मैंने उसकी 4 वर्षीय बेटी को बुलाकर पूछा कि क्या तुम पिता के साथ जाना चाहती हो तो उसने बताया 'नहीं'। पापा ने मम्मी को दियासलाई से जला दिया, वह चीख कर मर गई। उसने खिड़की से देखा, बेटा बोला 'पापा ने माँ को जलाकर मार डाला।' मैंने पति/पिता से पूछा कि तुम भले ही पत्नी की हत्या के अपराध में न्यायालय से बरी हो गए हो, पर क्या इन बच्चों की अदालत से इनके ज़ेहन से बरी हो सकते हो।

अपने बच्चों से जिन्होंने चीखती-चिल्लाती अपनी माँ को आग में जलते हुये और मरते हुये देखा है, निरुत्तर खड़े, पिता मौन पश्चाताप व अवसाद में था। लंच के बाद फैसला सुनाया कि दोनों बच्चे वयस्क होने तक अपने नाना-नानी की अभिरक्षा और देखभाल में रहेंगे। पिता यदि चाहे तो नाना-नानी की अनुमति से एक बार अपने बच्चों से मिल सकता है। मैंने पहली बार बूढ़े नाना-नानी की आँखों में खुशी के आंसू देखे जो अपनी बेटी की हत्या होने पर रो-रोकर सूख गए थे।

(संस्मरण संग्रह 'यादें वटवृक्ष बन गईं' से साभार)

शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं0 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

Remembrances-I

D.N. Dubey, IAS (Ret.)

During my Post Graduation days, there was one student Mr. X who was one year junior to me. He was the son of a school teacher and was aspirant to become an IAS. Inspite of limited resources and financial constraints, he never allowed this wish of him to deminish. However, his approach to achieve this ambition was a little bit peculiar. Of course, he used to study very hard and to support himself, he used to take some tutions also, but still he could find time for running on a battered bycycle to meet those who were either already in the service or were, like him, preparing for the Civil Services Examination. I used to wonder why, instead of employing his time to some more constructive vocations, he was wasting it in meeting people simply because they happened to be his probable role models. Later he, however, succeeded in getting into the Provincial Civil Service but he always thought and felt that lady luck had been cruel to him. But much later I realised that his habit and art of "Hero-Worshipping" was proving useful not only to him but to any who were like him because that was on he the surest ways to be successful (atleast in practical worldly sense of the word) in the times which we came across after completing our education. I also realised that this bent of his mind was largely a manifestation of his psychology to compensate for the loss he was forced to take otherwise.

One such bent of his psychology became apparent when he was posted in the same district just after completion of his training, where he was born, brought up and educated. For example, once he went to a Cinema Hall and insisted that since he was Magistrate he was entitled to see the movie without buying a ticket. When his august office was not recognised by the Manager of the Cinema Hall, he ensured to get recognition by doing inspection of the hall, for which, of course, he was entitled to, only after being so authorised by Additional District Magistrate Incharge of Entertainment Tax

Department. The cinema hall owners were not discreet enough as to not let this episode known to the higher officers. The result was that the next day not only officer concerned was chastened by the higher officers but also became a point of ridicule amongst us. We felt that if we have authority then the same should be recognised by others and we need not and should not and ought not to make a show of it in other words the idea was that the awe of the State must be felt by the others simply because it has got to be omnipresent. We also felt that by his immature act he lowered the dignity of the service and the administration. Similarly, when this fellow officer got printed "Magistrate" in the front and back of his scooter, we made a fun of him and forced him to get the same logo rubbed off from the scooter. Again the idea was that the Magistrate must be so much affective and must do so much of service in his jurisdiction that he be recognised by atleast one person if there is a crowd of 100 persons anywhere in his territory or jurisdiction.

But that was in 70's. Gradually it was observed that Policemen, the Press, the Doctors, the People's representative and everybody who was anybody started putting on red designation plates in front of their respective vehicles. Though it was, and still, is against the provision of relevant acts and rules people do it with impunity as they have little regard for the laws of the State, for the preserverance of which we fought and made sacrifices, is nowhere to be seen. Everybody, who is anybody, feels that he would not get his due share in the society until and unless he has nuisance value. We can ignore Policemen for this show of authority for the very simple reason that any uniformed force by virtue of its requirement of the job has to show its authority, and by regularly doing it as a part of their duty it becomes their habit in the same way as rudeness in the behaviour becomes their habit. We can also excuse and ignore local and small level politicians for such brazen acts of show off. But do'nt we have a feeling of repulsion when we find honourable members of lower judiciary or officers working in the secretariate or head of the offices putting on, in the front and in the back of their respective vehicles, red plates displaying the designation of the owner/occupant. The plates are not only crude in appreance but

against all norms of asthetic and ethical senses. Most of the time if someone is "Additional so and so" he will get printed the word "Additional" in such small letters that it would not be visible. Does it not show the mentality of the occupants/owner of the vehicle? Rules prescribe that such designation plates would be put only on official vehicles. The rules also prescribe the size and colour of the plates and the letters. But who cares? Now if the trend be compared with the mantality of the officer; Mr. X described earlier, it would appear that he was just only ahead of his times for which he was admonished. It is really difficult to understand that why these feudalistic frills at all are required and allowed in a socialistic and democratic society of ours. Why the Magistrate or Judges or social workers, politicians or press need to show to the general public that he or she is so and so. Why a Magistrate or a Special Secretary to the Government, for example, need to show his designation in the public when his functional territory is a court or office room in which he is sitting and dispensing justice judicial or administrative. These plates, red or blue lights, caps and dresses of the peon etc. are required only when they have to deal with the public and only because such paraphernelia help them in carrying out their duties in a more effective and orderly manner. Untill they are not recognised they would not be able to convey the authority of the State. But surely that is not required either from the politicians (of any level) or peoples' representative or any government officers doing only desk job. Even these Government functionary who deal with public on public places, say as in law and order situation, need these tale-tell signs while discharging official duty only and in not way are authorised to display the same while not on official duty. Similarly, it is not understandable as why peoples representative need shadow, pilot cars or any other paraphernalia reminding the people of Feudel era or British Raj. If the Prime Minister of Britain, who is also threatened by Irish Republican Army, can live in a small house which is still guarded by one unarmed policeman of the Scotland Yard, why cannot a lower state functionery in India live with unnecessary frills. What right any person in the Govt. or any of its servants has got to spend so much money of public exchequer for

his personal security when public at large, whose money it, is not secure and safe. There were days when a Station House Officer or Station Officer of Police Station was transferred, without any exception, if any road hold-up took place in his territorial jurisdiction until and unless he was able to solve the crime and catch hold of culprits within 24 hours of the time of the crime. The underlying philosophy was that a state cannot function if the people of that state do not feel safe on the highways. But see the situation today. The less said the better!

The only reason for all these acts appear to be the psychology of Mr. X. We are small people holding high positions which, perhaps, we do not deserve. The result is complex and fear Psychosis. Since we are not brave inside we try to intimidate people around us. We know that deity-worshipping psychology of the Indian People and we exploit it by trying to be some demi-gods. We have created ruling class which is much more crude, worse and reprehensible than the Britishers; against whom we fought to achieve equality.

Time has come that we should make determind efforts to shake all these show of authority by the people who do not deserve and do not need to show it. We do not have right to waste poor people money which they provide to the Govt by way of taxes on personal whims, pleasures and caprices of the people who ostensibly are there on the plea to serve these poor people who, unfortunately, hardly get served.

December the 10th, 1998 *To be contd.*

•

Time Will Roll Back

- **Dr. Anil Mishra,** Additional Director Medical Health, U.P.

A bottle-fed, crèche cared, test tube boy
Asked his robot teacher,
What do you mean by,
Father, mother, brother and sister?
The robot searched its metallic brain,
Unable to explain,
Whispered in the little ear of the boy,

My dear toy!
These are obsolete terms,
Of historical importance,
In the twenty-first century,
Have almost no significance-
See, we are busy,
In the process of globalization,
Have no time,
To think about these relations.
In the world market
Of shares and debentures,
Human values are kept reserved,
For holiday adventures.
Have a sip of the synthetic drink,
And start to think,
About chips and clones,
Fusion and fission,
And develop ultra-sharp,
Microscopic vision.
Otherwise,
You will lag behind the race of the day,
Have you anything else to say?

No, the boy murmured,
But teacher!
The day we cross the speed of light,
Time will roll back to the past, am I right?

(This poetry was published in 'World Poetry 2001', a collection of best poems by 122 eminent poets from 45 countries.)

DR. ANURAG DIXIT'S

DIABETES/PAIN MANAGEMENT/
CANCER/ SKIN & HAIR TREATMENT
CARE THROUGH AYURVEDA

आयुर्वेद

15
YEARS OF
ESTABLISHMENT

HAPPY
2024
NEW YEAR

consult
now!

DR. ANURAG DIXIT
BAMS, MD, CCYP, PGDHA, QMHC
आयुर्वेदिक रेमेडीज पंचकर्म
एवं एक्यूपंक्चर क्लीनिक

D-4/426, VIJAYANT KHAND, GOMTI NAGAR
CONTACT : +91 8601 12 4100

The Gomti - Our Identity

Divya Shukla

The Gomti is Lucknow's lilting, soulful Raga, Different from the eternal, majestic Ganga. And yet... On it's curling folds, whispers our distinctive history while wrapped in a gossamer of mystery. Like the leisurely Nawabs, it meanders through the city. It's rippling waves sing in unison a harmonious rhapsody. This little insular river from the "bhabhar" Perhaps emerges only to be our saviour. Protecting the land of Kathak, Urdu and luscious mangoes. It's core-pervasive sweetness just flows and grows. Dancing like literary couplets, wearing lyrical anklets, it nimbly moves like the needless of chikankari's artistic rites. Almost matching the vibrancy of our soaring kites. The modern lazy city reluctantly welcomes the rising Sun. But the famous "Shaame-Awadh" is still a star attraction. On its vast watery canvas, various hues write inscriptions of Hope, Faith and Peace like the Sun's Benediction. Much water has flown down this blessed river. But it's soothing, magical identity stands steadfast like a pillar. Our lifeline and a living symbol of peaceful fraternity. Let's perpetuate the benevolent legacy of Ma Gomti.

x

आयुर्वेद के स्वास्थ्य सूत्र संस्कृत और अंग्रेजी में

संकलन- **वैभव शुक्ला**

1. अजीर्णेभोजनंविषम् : If previously taken Lunch is not digested...taking Dinner will be equivalent to taking Poison. Hunger is one signal that the previous food is digested.
2. अर्धरोगरी निद्रा : Proper sleep cures half of the diseases.
3. मुद्गदालीगदव्याली : Of all the Pulses, Green grams are the best. It boosts Immunity. Other Pulses all have one or the other side effects.
4. भग्नास्थि-संधानकरोलशुनः Garlic even joins broken Bones.
5. अति सर्वत्र वर्जयेत् : Anything consumed in excess, just because it tastes good, is not good for Health. Be moderate.
6. नास्तिमूलमनौषधम् : There is No Vegetable that has no medicinal benefit to the body..
7. न वैद्यः प्रभुरायुषः- No Doctor is capable of giving Longevity. (Doctors have limitations.)
8. चिंता व्याधि प्रकाशाय : Worry aggravates ill-health.
9. व्यायामश्च शनैः शनैः- Do any Exercise slowly. (Speedy exercise is not good.)
10. अजवत्चर्वणंकुर्यात् : Chew your Food like a Goat. (Never Swallow food in a hurry. Saliva aids first in digestion.)
11. स्नानं नाम मनःप्रसाधनकरंदुः स्वप्न-विध्वंसनम् : Bath removes Depression. It drives away Bad Dreams.
12. न स्नानमाचरेद्भुक्त्वा : Never take Bath immediately after taking Food. (Digestion is affected).
13. नास्तिमेघसमंतोयम् : No water matches Rainwater in purity.
14. अजीर्णेभेषजंवारि : When there is indigestion taking plain water serves like medicine.

15. सर्वत्र नूतनंशस्तं, सेवकान्नेपुरातने : Always prefer things that are Fresh.. Whereas Rice and Servant are good only when they are old.

16. नित्यंसर्वा रसा भक्ष्याः- Take the food that has all six tastes. (viz: Salt, Sweet, Bitter, Sour, Astringent and Pungent).

17. जठरंपूरायेदर्धम्अन्नैर्, भागंजलेन च। वायोः संचरणार्थाय च तर्थमवशेषयेत् : Fill your Stomach half with Solids, (a quarter with Water and rest leave it empty.)

18. भुक्त्वाशतपथंगच्छेद् यदिच्छेत्चिरजीवितम् : Never sit idle after taking Food. Walk for at least half an hour.

19. क्षुत्साधुतांजनयति : Hunger increases the taste of food.. In other words, eat only when hungry.

20. चिंता जरा नाम मनुष्याणाम् : Worrying speeds up ageing.

21. शतंविहायभोक्तव्यं, सहस्रंस्नानमाचरेत् : When it is time for food, keep even 100 jobs aside.

22. सर्वधर्मेषुमध्यमाम् : Choose always the middle path. Avoid going for extremes in anything

Goldern words of wisdom in Sanskrit by our sages.
Please share with your loved ones.

x

चोल	: 1600 वर्ष	अहोम	: 700 वर्ष
चालुक्य	: 700 वर्ष	पल्लव	: 600 वर्ष
राष्ट्रकूट	: 500 वर्ष	विजयनगर	: 400 वर्ष

पर हमें किताबों में सबसे अधिक जो पढ़ाया गया वो था मुगल (300 वर्ष), सोचिए आखिर ऐसा क्यों किया गया...?? क्योंकि.... नेहरू और गांधी थे....

C.V. NETRALAYA

CP 6A, Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow
Mob. : 80525 10018

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon
Dr. V. K. Mishra

Ayurvedic Treatment for Neck Pain

Dr Anurag Dikshit
BSc; BAMS; MD (Ayu); CCYP; PGDHA; QMHC
Sahara Hospital, Lucknow
Mob: 8601124100
dranurag28@gmail.com

Dr Supriya Shukla Dikshit
M.D. (Ayu)
Ayurvedic Remedies Clinic
www.ayurvedicremedies.org

D 4/426, Vijayant Khand, Gomti Nagar, Gomti Nagar, Lucknow

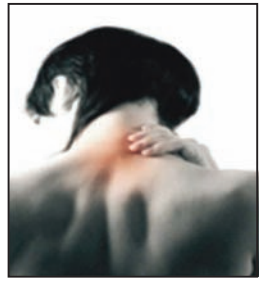

Many people deal with constant neck pain and frequently suffer from relatedheadaches. 85% of all headaches come from our neck. There are many underlying causes for neck pain. Muscle tension is a big player in this game. It is responsible for much of what hurts our necks, heaviness, pain with motion, and associated headache patterns.

Neck pain and stiffness that gets progressively worse may be an indication of cervical spondylitis. The pain may range from mild to severe and debilitating. The condition may last for several months before improving, or it may become chronic.

Cervical spondylitis is a chronic degeneration of the bones (vertebrae) of the neck (cervical spine) and the cushions between the vertebrae (disks). Also known as cervical osteoarthritis, the condition usually appears in men and women older than 40 and progresses with age. Although cervical spondylitisaffects both sexes equally, men usually develop it at an earlier age than women do.

The degeneration in cervical spondylitis most likely is a result of wear and tear on the neck bones as you age. The changes that accompany the degeneration, such as developing abnormal growths (bone spurs) on the spine, can lead to pressure on the spinal nerves and, sometimes, the spinal cord itself.

Signs and symptoms

- Neck pain that radiates to the shoulders and arms
- Numbness or weakness in the arms, hands and fingers
- Headaches that radiate to the back of the head

- Loss of balance
- Numbness or weakness in the legs, if the spinal cord is compressed
- Loss of bladder or bowel control, if the spinal cord is compressed

When to seek medical advice

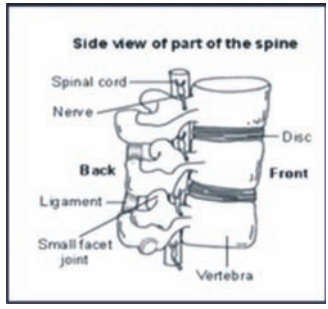

Consult your Ayurveda physician if:

- You have persistent neck pain
- The pain worsens
- You develop numbness in your arms or legs

Complications

Cervical spondylitis is the most common cause of spinal cord dysfunction in older adults. If the condition progresses and isn't treated, or if treatment isn't successful, the disabilities may become permanent. Complications may include:

- **Pressure on the spinal cord.** Degenerative changes in the spine can lead to narrowing of the spinal canal that houses the cord, resulting in pressure on the cord anywhere along the spine. Cervical spondylitis can cause narrowing of the canal of the cervical spine, which can lead to numbness and weakness in your arms as well as your legs, even affecting your ability to walk. Pressure on the spinal cord also may cause loss of bowel or bladder control.
- **Pressure on the spinal nerves.** Spinal stenosis, bone spurs or herniated disks can put pressure on the roots of one or more nerves that branch off the spinal cord at the neck. The pressure irritates the nerve, which may cause pain, tingling, burning, weakness or numbness down your arms or in your hands.

Investigation:

A plain X-ray of the cervical spine is helpful. There is impairment of naturalcervical lordosis, reduction of intervertebral spaces, osteophytic projection leading todistortion and encroachment of intervertebral foramina, andshortening of AP diameter of the cervical canal in few cases.

CT scan with or without contrast ispreferred if available. MRI is another useful mode of investigation.

Treatment

Without treatment, the signs and symptoms of cervical spondylitis may decrease or stabilize, or they may worsen. The goal of treatment is to relieve pain and prevent permanent injury to the spinal cord and nerves.

Treatment of mild cases

Mild cases of cervical spondylosis may respond to:

- ***Commencing simple Ayurveda herbal decoctions and oil treatments and some Guggulu tablets under the advise of specialist.*** Regular use of medicated Ayurveda oils will considerably contribute to slowing down the degenerative process of the cervical spine.
- ***Doing prescribed exercises*** to strengthen neck muscles and stretch the neck and shoulders. Yoga, Low-impact aerobic exercise, such as walking or water aerobics, also may help.

Treatment of more serious cases

For more severe cases, treatment may include:

- ***Bed rest and Ayurveda medicines and Panchakarma treatments*** if required ***Hospitalization with*** for around 3-5 weeks to completely immobilize the cervical spine and reduce the pressure on spinal nerves. This treatment has been found to be effective in many patients of cervical spondylitis.

PANCHAKARMA TREATMENTS FOR NECK PAIN:

ABHYANGA (Massage)

In this treatment, Specific Body massage for 45-60 minutes with herbal oil or herbal cream to tone up the body and to improve the blood circulation etc. is performed. It is useful for neck pain.

VASHPASWEDANAM (Medicated Steam Bath)

This is a unique treatment and under this treatment leaves of medicinal plants are boiled and resulting steam is passed to the whole body. This treatment is helpful in to eliminate impurities from the body, reducing fat and also helpful in fighting pain.

SHIRODHARA

In this process medicated herbal oilsare poured on the forehead through a special method for 30 to 45 minutes. This treatment is very useful for mental tension, stress, hypertension, insomnia, Vata predominated diseases and certain other diseases of neck and head.

PATRAPOTALI PINDA SWEDA

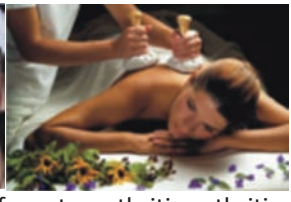

Herbal leaves and herbs or herbal powders are applied to the whole body in boluses with hot medicated oils for 45 minutes per day for a period of 7 to 14 days. This treatment is for osteoarthritis, arthritis, swelling. Spondylitis, sports injuries etc.

MANYA VASTI

In this process specially prepared warm medicated oil is kept over the neck back with herbal paste boundary. This treatment lasts for 45 minutes to 1 hour and it is good for any type of back pain and spinal disorders.

NASYAM

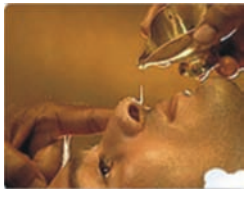

Herbal juices, medicated oils through the nose for 7 to 14 highly effective for certain kinds bells palsy, writers cramps, disorders, insomnia depression, certain types of skin diseases etc.

SHIROBASTI

Certain lukewarm herbal oils are poured into a cap fitted on the head for 15 to 60 minutes per day according to the patient's conditions for a period of 7 days. This treatment is highly effective for mental stress, rejuvenation of sensory organs, facial paralysis, dryness of nostrils, mouth and throat, severe headaches, burning sensation of head and other vata predominant diseases.

PIZHICHIL

In this treatment, lukewarm herbal oils are applied all over the body by two to four trained masseurs in a special rhythmic way for about 60 to 90 minutes per day fora period of 7 to 21 days. This treatment is very useful for rheumatic diseases like arthritis, paralysis, hemiplegia, and nervous disorders and spinal disorders etc.

NAVARAKHIZHI

It is a process by which the whole body or any specific part thereof is made to perspire by the application of certain medicated puddings externally in the form of boluses tied up in a muslin bag. This is applied by two to four masseurs for about 60 to 90 minutes per day for a period of 14 days. This treatment is for rheumatism, pain in the joints and back, emaciation of limbs, blood pressure, cholesterol and certain kinds of skin diseases.

Prevention

You may not be able to prevent cervical spondylitis because it involves the aging process. However, you may be able to reduce your risk by:

- Skipping high-impact activities, such as running and high-impact aerobics, if you have any neck pain
- Doing exercises to maintain neck strength, flexibility and range of motion
- Taking breaks when driving, watching TV or working on a computer to keep from holding your head in the same position for long periods
- Practicing good posture, with your neck aligned over your shoulders
- Protecting your neck from injury by using a seat belt when in a car and avoiding activities that strain your neck

A CASE STUDY:

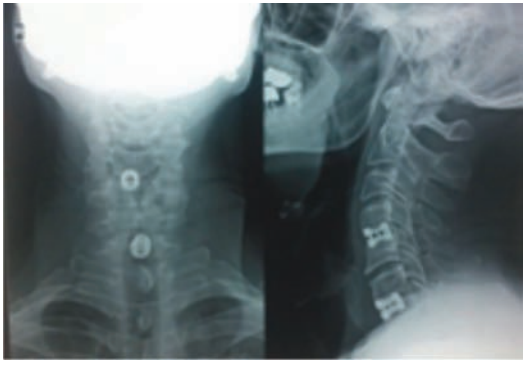

A patient from Australia suffered fusion of neck vertebrae 4 years back and was operated upon and fixation with titanium plates (See white spots in X-Ray), again he suffered whiplash injury due to accident 2 years back and since then was suffering from continuous chronic pain. All medications could not relieve him of his stress and nagging neck pain and headache. He came to us in India for panchakarma therapies and was treated for 2 weeks, the pain and stress is gone and he isnow a relieved man.

x

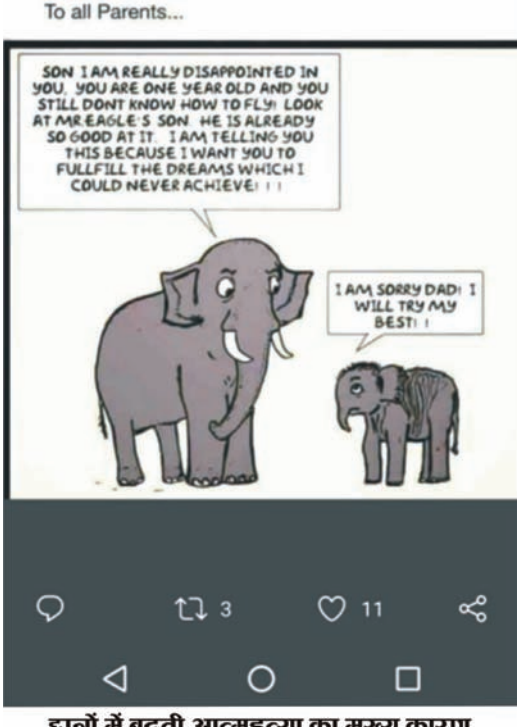

छात्रों में बढ़ती आत्महत्या का मुख्य कारण

लोक साहित्य में श्रीराम

– डॉ.(श्रीमती) गायत्री वाजपेयी

लोक साहित्य ऐसी पावन सुरसरि है जिसमें विभिन्न बोलियों की विविधवर्णी साहित्य सरिताएँ आकर समाहित हो जाती हैं। आस्था एवं विश्वास के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन भारतीय वाङ्मय का अनुपम व अद्वितीय अनुष्ठान है। यही कारण है कि लोक साहित्य में भी श्रीराम का चरित्र अपनी समग्रता के साथ अभिव्यक्ति पाता है। लोक साहित्य की पावन पयस्विनी श्रीराम के निर्मल चरित्र का अंकन कर जन-जन का कल्याण करती रही है। श्रीराम-सीता की पुनीत लीलाएँ वंदनीय, मननीय एवं अनुकरणीय हैं। वे सार्वदेशिक, सार्वभौमिक तथा सार्वयुगीन हैं जो युग-युगान्तर तक लोकमानस को त्याग, समर्पण, सेवा, प्रेम एवं उत्सर्ग के शाश्वत मूल्यों की शिक्षा देती रहेंगी। लोक मानस में राम ऐसे रचे बसे हैं कि राम नाम के बिना उनका कोई भी मांगलिक कार्य संपन्न नहीं होता। प्रत्येक भारतीय का पुत्र व पुत्री चाहे वह धनी का हो या निर्धन का, ब्राह्मण का हो या शूद्र का राम-सीता का प्रतिरूप होता है। प्रत्येक वर में राम के रूप के दर्शन तथा वधू में सीता की छवि का आरोप किया जाता है। भारतीय संस्कृति में प्रचलित संस्कारों में चाहे नामकरण हो चाहे यज्ञोपवीत या विवाह संस्कार महिलाएँ राम-सीता के ही गीत गाती हैं। एक लोकगीत प्रस्तुत है जो पुत्र जन्मोत्सव पर गाया जाता है-

जनमें राम सलोना अवध में,
रानी कौशिल्या के लाल भये हैं,
राजा दसरथ के छौना।
रानी कौसिल्या की कूंख सिरानी
राजा दसरथ के नैना।

xxxxxx

जनमें राम सलोना अवध में। (निजी संग्रह)

यज्ञोपवीत संस्कार हमारे यहाँ का एक प्रधान संस्कार है। साधारण बोलचाल में इसे उपनयन संस्कार या जनेऊ कहते हैं। आर्य जाति में यज्ञोपवीत धारण की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। इस श्लोक में यज्ञोपवीत का महत्त्व रेखांकित किया गया है-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

अर्थात् यज्ञोपवीत परम पवित्र है जो प्राचीनकाल में प्रजापति के साथ उत्पन्न हुआ था। यह आयु, बल और तेज को प्रदान करने वाला है। यह संस्कार द्विज बनाता है.... 'संस्कारात द्विज उच्यते'।

यज्ञोपवीत में तीन धागे होते हैं। तीनों धागे प्रतीकात्मक होते हैं। जैसाकि इस लोकगीत में वर्णित है-

जनेऊ आज पैरत दसरथ के लाल दसरथ घर मोद बढ़ै।
तीन पगा में बिरमा बाँधे दसरथ घर मोद बढ़ै।
विस्नु बाँधे बिस्व करतार दसरथ घर मोद बढ़ै।
बिरमा ठाँड़े बिस्नु ठाँड़े ठाँड़े त्रिपुरार दसरथ घर मोद बढ़ै।
जनेऊ आज पैरत दसरथ के लाल दसरथ घर मोद बढ़ै।

(निजी संग्रह)

विवाह स्त्री-पुरुष का वह धर्मसम्मत पारस्परिक सम्बन्ध है, जो मनुष्य को शास्त्रों में बताए गए तीन ऋणों—ऋषि ऋण, देव ऋण एवं पितृ ऋण से उऋण कराने में सहायक है। विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों में वर-वधू के रूप में राम-सीता की ही अनुहार प्रत्येक जोड़ा होता है। एक लोकगीत द्रष्टव्य है जिसमें राम और सीता की दुल्हा-दुल्हिन के रूप में अद्भुत छवि वर्णित है-

बने दुल्हा छवि देखो भगवान की दुल्हिन बनी सिया जानकी,
जैसे दुल्हा अवध बिहारी जैसी दुल्हिन जनक दुलारी
जाऊँ तनमन से बलिहारी।
मंसा पूरी भई सबके अरमान की दुल्हिन बनी सिया जानकी।
ठाड़े राजा जनक के द्वार संग में चारों राजकुमार दर्शन करते सब नरनारी।
धूम छाई अब डंका निशान की दुल्हिन बनी सिया जानकी।
कहें जनक दोई कर जोर सुनियो सुनियो अवध किसोर।

xxxxxx

मौपे साधे न सध है जल पान की। (निजी संग्रह)

श्रीराम जनजीवन में गहराई से पैठे हुए हैं। प्रत्येक प्राणी के अंतर्तम में राम व्याप्त हैं। राम ही जीवन है, राम ही आत्मा हैं, राम के अभाव में जीवन, जीवन

नहीं आत्मा, आत्मा नहीं। राम तो वह शक्ति है जो प्राणी मात्र में रमण करती है। 'रमन्ते कणे-कणे इति रामः' अथवा 'रमन्ते इति रामः' अर्थात् जो कण-कण में, रोम-रोम में रमण करते हैं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विद्यमान हैं वही राम हैं। राम शब्द में 'रा' का मतलब है- संसार और 'म' का मतलब है- ईश्वर। इस प्रकार जो सम्पूर्ण विश्व का स्वामी यानि ईश्वर है वही राम हैं। यही कारण है कि जीवन के अंतिम क्षणों में राम नाम के स्मरण का परामर्श दिया जाता है क्योंकि राम नाम सत्य है जिसका उद्घोष मरणोपरांत शव यात्रा में जाते हुए लोगों के द्वारा किया जाता है, परस्पर मिलने पर भी राम नाम के उच्चारण द्वारा अभिवादन करने की परम्परा है। लोक साहित्य सर्जकों ने भी अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी से राम नाम की महत्ता का प्रतिपादन किया है। लोककवि संसार सागर में निमग्न प्राणियों को ज्ञानोपदेश का अमृतपान कराते हुए परामर्श देते हैं कि सांसारिक रिश्ते-नाते स्वार्थ पर आधारित हैं, व्यक्ति के साथ न कुछ आया है और न ही कुछ जाएगा। वह अकेला आया है और अकेला ही जाएगा। अतः देव दुर्लभ मानव देह को इस तरह व्यर्थ न गँवाकर प्रभु स्मरण में ही तल्लीन होने में जीवन की सार्थकता है।

पाकर मानुष को तन भज ले रघुराई
जामे गति बन जाय तेरी मोरी काम न आई।
जे सब स्वारथ के अपने दारा सुत भाई।
अंत समय सब पड़ा रहै कोई संग न जाई

xxxxxx

सार सुरारि को ध्यान जो है झूठी दुनियाई।
जो अजहूँ हरिनाम जपे तो तेरी होय भलाई
वंश गोपाल प्रभु सबको सुखदाई। (निजी संग्रह)

राम नाम समस्त सुख की खान है राम नाम के अलौकिक प्रभाव से व्यक्ति समस्त माया मोहों से मुक्त हो जाता है उसके इहलोक और परलोक सहज ही सँवर जाते हैं। राम नाम के स्मरण के सुफल से दुर्दांत डाकू रत्नाकर विश्वमंच पर वाल्मीकि के नाम से विख्यात हुए। जिसका संकेत मानसकार तुलसी ने इन पंक्तियों के माध्यम से दिया है-

उलटा नाम जपत जग जाना। वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।

श्रीराम का नाम करोड़ों जन्मों के पापों का प्रक्षालन करता है। राम 'ॐ' का ही प्रतिरूप है वह एक ऐसा अनमोल रत्न है जिसको मन रूपी मुद्रिका में जड़ा

जाए तो वह भाग्य को अलौकिक दीप्ति प्रदान कर देता है उसमें जयपुरी रत्नों की चमक है तथा भजन भक्ति की मीनाकारी है जो मानव देह को प्रतिक्षण दिव्य प्रकाश प्रदान करती है तथा मलिनता से सदा रक्षा करती है इस सन्दर्भ में लोककवि ईसुरी कहते हैं-

रसना राम कौ नाम नगीना, मन मुदरी में दीना।
नियत निवान खान से खोदो, ऐसो थान कहींना।।
देत उदोत जोत जैपुर की, चढ़ौ भजन को मीना।
दिन दिन देत देह खाँ दीपक, कभउँ न होत मलीना।।

(बसंत के रंग पृ. 149)

लोकमानस में राम न केवल पूज्य व आराध्य हैं अपितु उनका मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप जन-जन के लिए आदर्श है। सुप्रसिद्व समाजवादी चिंतक डॉ. राम मनोहर लोहिया ने भी राम को उत्तर से दक्षिण तक पदयात्रा करने वाला राष्ट्र पुरुष निरूपित किया है जो शताब्दियों से सांसारिक प्राणियों को अपनी ओर आकृष्ट किए हुए हैं। वाणी की सार्थकता ही राम नाम में निहित है जिसका संकेत तुलसी ने 'राम नाम बिनु गिरा न सोहा' कह कर दिया है। इसीलिए लोकवाणी श्रीराम नाम के स्मरण का संकेत देती है-

राम को नाम सदा सुखदाई की बोल मेरे भाई
नाम जपे जम झाप मिटाई की बोल मेरे भाई

xxxxxx

राम बिना कोई काम न आई की बोल मेरे भाई। (निजी संग्रह)

कलियुग में राम नाम का स्मरण ही एक मात्र ऐसा अवलम्ब है जिसको ग्रहण कर व्यक्ति भवसागर को सहज ही पार कर जाता है। अतः ऐसे दयालु, कृपालु प्रभु के निरन्तर स्मरण में ही व्यक्ति का कल्याण है क्योंकि यह सांसारिक वैभव यहीं पड़ा रहेगा साथ तो केवल व्यक्ति के पाप-पुण्य ही जाएंगे। लोककवि ईसुरी संसार की नश्वरता को देखते हुए सीताराम के भजन का परामर्श देते हैं-

भज मन सिया राम भगवाने, संग कछु न जाने।
धन संपत सब माल खजाने, रैजे ऐई ठिकाने।
भाई बन्ध और कुटुम कबीला, जे सब स्वारथ जाने।
कैड़ा कैसो छोड़ ईसुरी, हंसा होत रमाने।

(बसंत के रंग पृ.152)

अन्तिम समय में यही राम नाम ही तो भवसागर से पार उतारने में सहायक होगा अतः मन से प्रभु राम का स्मरण करने में ही व्यक्ति का कल्याण होगा। जीवन तो क्षणभंगुर है, पानी के बुलबुले की तरह कब अस्तित्व हीन हो जाए कौन जाने? अतः इसे व्यर्थ के कार्यों ईर्ष्या, द्वेष, छल छद्म आदि दुष्प्रवृत्तियों से बचाने और राम नाम में रमाने में ही हित है क्योंकि समय निकल जाने पर कुछ भी हाथ नहीं लगेगा और जिस दिन जीवन यात्रा समाप्त होगी उसी दिन सम्पूर्ण जीवन के शुभाशुभ कार्यों का लेखा-जोखा होगा। लोकरचनाकार के शब्दों में-

जिदना खतम होत बही खाता, बुलवा लेत विधाता।
घरी पलक की देरी नाहीं, सत्य हिसाब कराता।।
करनी होय सो कर लो जग में, फेर न जो दिन आता।
कात ईसुरी भज लौ रामै, नई पीछे पछताता।।

(बसंत के रंग पृ.141)

पंच महाभूतों से निर्मित बड़े भाग्य से प्राप्त यह मनुष्य शरीर क्षणभंगुर है, न जाने कब विनष्ट हो जाए? अतः व्यक्ति को बड़े संयम और जतन से रहते हुए लोककल्याणकारी कार्यों में अपने को निरत रखना चाहिए क्योंकि मरणोपरांत तो यह नर देही किसी काम की नहीं। पशु शरीर की तो उपयोगिता भी है मनुष्य शरीर की तो कोई उपयोगिता नहीं। लोककवि के कथनानुसार -

तन को तनक भरोसों नइयाँ, राखे लाज गुसाइयाँ।
तरवर पत्र गिरै धरनी में, फिर न लगत डरइयाँ।।
जर बर देह मिले माटी में, चुने न राख चिरैयाँ।
जा नर देही काम न आवै, पसु की बनै पनैयाँ।।

(बसंत के रंग पृ.144)

इस जगत में केवल 'एक भरोसों एक बल एक आस विश्वास' प्रभु श्रीराम का नाम ही है क्योंकि भयावह कलिकाल में श्रीराम का गुणगान ही एक मात्र आधार है अतः सभी भरोंसों को त्यागकर श्रीराम के गुण श्रवण व गुण कथन द्वारा अपने जीवन को कृतार्थ करना ही श्रेयस्कर है। सीताराम का स्मरण परम कल्याणकारी है। भजन एवं स्मरण के प्रभाव से प्रह्लाद की रक्षा हुई। राम नाम के समुद्र में अवगाहन कर ध्रुव ने अटल पद प्राप्त किया। राम नाम के अद्भुत प्रभाव की अनुगूंज लोककवि की वाणी में भी ध्वनित होती है-

जो कोउ सीताराम बिसारै, जीती बाजी हारै।
नामई सै प्रहलाद बचा लए, हिरनाकुस खों मारि।

परमेश्वर ने देह दई जा, नाम की माला टारै।
ईसुर भवसागर से जन खाँ, नामई पार उतारै।।

भक्त की पुकार सुनते ही कृपादृष्टि करने वाले प्रभु श्रीराम ही हैं अपने सहज स्वभाव के कारण वे बिन माँगे ही अपने भक्तों को सब कुछ दे देते हैं। 'कलियुग केवल नाम अधारा' के ध्रुवसत्य को जानते हुए भी मनुष्य सांसारिक मायामोह में निमग्न रहता है। लोककवि की परामर्शदात्री वाणी इन शब्दों में प्रस्फुटित होती है-

राम नाम को गावै, तोहे लाजई न आवै।
उमर तमाम बितावै, तोहे लाजई न आवै।।
जग जंजाल सुहावै, तोहे लाजई न आवै।
हरिचर्चा न भावै, तोहे लाजई न आवै।।

xxxxxx

अमृत तज विष खावै तोहे लाजई न आवै।। (निजी संग्रह)

भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रतीक पुरुष श्रीराम का चरित्र एवं उनकी लीलाएँ मननीय, चिंतनीय एवं अनुकरणीय हैं। जो युग-युगान्तर से जन मन को रिझाती रहीं है। लोककवि की वाणी में इसकी स्पष्ट अनुगूंज सुनाई पड़ती है-

सीताराम की कहानियाँ नीकी लगती।
दसरथ घर अवतार लियो है नाम धरै रघुराई।।
राजपाट तज बन को निकरे छोड़े बाप मताई।
राम लखन ढूढ़न को निकरे बोले गीध जटाई।

xxxxxx

गयी है लंका को दुल्नियाँ नीकी लगती।
संग में लीन्ही न उड़नियाँ नीकी लगती।।

प्रोफेसर (हिन्दी अध्ययनशाला एवं शोधकेन्द्र)
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)
E-mail ID: gayatribajpai16@gmail.com
स्थायी पता : वाजपेयी भवन, रेलवे क्रॉसिंग के पास,
किरण कॉलेज चौराहा, कटरा, बाँदा (उ.प्र.)

•

चिकित्सा विज्ञान में द्वैत और अद्वैत

– डॉ. डी.एस. शुक्ला

वेदान्त कहता है- "अहं ब्रह्मास्मि" मैं ब्रह्म हूँ!

फिर तुरंत कहता है- "तत् त्वं असि" तुम भी वह हो!

जब हम और तुम (सब ब्रह्म हैं) तब द्वैत कहाँ है?; मैं, तुम वह, और वे कैसे?

आध्यात्म कहता है कि सृष्टि की विविधता के मूल तीन तत्व- सत, रज, तम गुण है जिनके रूपांतर से 'महत्तत्व बुद्धि' का प्राकट्य होता है। इस बुद्धि का रूपांतर 'अहंकार' में होता है, जिसका लक्षण 'भेद-ज्ञान' है। इसमे पृथक-पृथक बोध कराने की शक्ति है।

बाइबल के अनुसार आदि पुरुष आदम को ईदें के बगीचे में लगे वर्जित पेड़ से ज्ञान का फल खाने से भेद-बुद्धि प्रकट हुई और आदम को अपने पराये का बोध हुआ। यह अहंकार अथवा अहं (भेद ज्ञान) एक जीव को दूसरे से पृथक कर द्वैत का मार्ग प्रशस्त करता है। वहीं विज्ञान के अनुसार हमारी त्वचा हमें एक दूसरे से प्रथक करती है।

चिकित्सा विज्ञान में त्वचा के कार्यों के बारे में समझाते हुये एक कोटेशन कोट किया जाता है- "व्हाट इज द यूज आफ पिग स्किन"? सुअर की खाल की क्या उपयोगिता है? उत्तर है- "टु कीप द पिग टुगेदर" सूअर के सभी अंगों को समेट कर रखना (और एक सुअर को दूसरे सुअर से अलग करना)।

यही तथ्य मनुष्य सहित हर जीव के बारे में सत्य है। मैं आप से और आप अन्य सबसे कैसे अलग हैं? अपनी त्वचा के कारण। त्वचा का आवरण प्रत्येक जीव या व्यक्ति को एक दूसरे से पृथक करता है।

यहाँ तक कि शरीर की सभी कोशिकाएं एक जीव ही जीव का भाग होते हुये भी एक दूसरे से एक आवरण द्वारा अलग रहती हैं। माँ के अवयवों से बना शिशु त्वचा द्वारा माँ से अलग अस्तित्व बना कर माँ के गर्भ में विकसित होता है।

तंत्रिका वैज्ञानिकों (न्यूरोसाइंटिस्ट्स) ने बंदरों के मस्तिष्क पर अन्वेषण करते

हुये प्रयोगशाला में कई बंदरों में से केवल एक को खाने के लिये सेब दिया गया। वह बन्दर सेब लेने के प्रयास में जब अपना हाथ बढाता है; उसके हाथ बढाने से उसके (बन्दर के) मस्तिष्क की कुछ विशेष कोशिकाएं सक्रिय हो जाती हैं, जो उस बन्दर को परीक्षक के हाथ से सेब लेने के प्रयास में सहायक होती हैं। वैज्ञानिक यह देख कर चकित हो उठे कि दूसरे बन्दर, जो पहले बन्दर को सेब खाने के प्रयास को केवल देख रहा था, उस दूसरे बन्दर के मस्तिष्क की भी वही विशेष कोशिकाएं सक्रिय हो उठती हैं। हालांकि दूसरे बन्दर के हाथ सेब उठाने के लिये नहीं उठे थे। यह सक्रियता शारीरिक न होकर केवल मानसिक रूप से घटित हो रही थी। मस्तिष्क की जिन विशेष कोशिकाओं में केवल सेब लेने की क्रिया देख कर प्रक्रिया हो रही थी, उन कोशिकाओं को वैज्ञानिकों ने 'मेमोरी सेल्स' या 'स्मृति अथवा नकल कोशिका' का नाम दिया। वैज्ञानिकों ने बताया कि इन स्मृति कोशिकाओं की मदद से ही एक जीव दूसरे को कार्य करते देख कर स्वयं सीखता है।

यह स्मृति कोशिकाएं मानव मस्तिष्क में भी पायी जातीं हैं। इन्हीं स्मृति कोशिकाओं द्वारा बच्चा अपने बड़ों की नकल कर चलना, उठाना, बैठना और बोलना सीखता है।

एक अन्य विशेष प्रकार की एक और कोशिकाएं मस्तिष्क के अग्र भाग में पायी जाती हैं जिन्हें 'इम्पैथी सेल्स' कहते हैं। विख्यात भारतीय न्यूरो-साइंटिस्ट वी एस रामचंद्रन इन सेल्स को 'गांधी' सेल्स कहते हैं। डा रामचंद्रन ने मानव मस्तिष्क पर किये अपने प्रयोगों से सिद्ध किया यदि एक 'अ' व्यक्ति के हाथ में सुई चुभोई जाय तो जिस उसे दर्द की अनुभूति होगी और और वह उफ कह कर अपना हाथ हटा लेगा। प्रयोग में देखा गया कि सुई चुभने के दर्द से 'अ' के मस्तिस्क के फ्रंटल लोब की कुछ कोशिकाओं प्रक्रिया हुई। ठीक उसी प्रकार की क्रिया देखने वाले व्यक्ति 'ब' की 'एम्पैथी सेल्स' में भी हुई अर्थात् देखने वाले व्यक्ति 'ब' के मस्तिष्क में भी सुई चुभने के दर्द का एहसास हुआ। किन्तु 'ब' को किसी प्रकार की पीड़ा नहीं हुई और प्रकट तौर पर उसने प्रतिक्रिया भी नहीं की।

डा रामचंद्रन बताते हैं कि 'अ' की त्वचा ने सुई चुभने की सूचना मस्तिष्क को भेजी। 'अ' के मस्तिष्क ने उसे पीड़ा की प्रतिक्रिया से 'अ' ने दर्द से उफ कह कर हाथ हटा लिया. वहीं 'ब' के मस्तिष्क में केवल आँख से प्राप्त सुई चुभने के सूचना पहुँची। सुई चुभने की सूचना से 'ब' के मस्तिष्क की एम्पैथी सेल्स ने भी

'अ' के सामान पीड़ा महसूस की, किन्तु 'ब' की त्वचा ने तत्काल ही 'ब' के मस्तिष्क को आश्वस्त किया कि निश्चिन्त रहो मुझे कोई सुई नहीं चुभी। त्वचा से सुई न चुभने की से 'ब' का मस्तिष्क आश्वस्त हो गया कि सुई केवल 'अ' को ही चुभी है। इसलिये 'ब' के मस्तिष्क ने उस पीड़ा को इग्नोर कर 'अ' की भांति कोई सुरक्षात्मक प्रतिक्रिया नहीं करता है।

इसी प्रकार डा रामचंद्रन ने बताया कि जब हम सिनेमा में देखते हैं कि किसी को एकाएक छुरा भोंक दिया गया; हम अनजाने में ही उछल पड़ते हैं और मुँह से बेसाख्ता "उफ" निकल जाता है। किन्तु अगले क्षण ही हम आश्वस्त होकर हँस पड़ते हैं कि छुरा पिक्चर में भोंका गया है, हमें कोई हानि नहीं पहुँची।

किसी को एकाएक चाकू लगने से हमारा चौंक पड़ना और प्रयोग में 'अ' के सुई चुभने से 'ब' की 'इम्पैथी सेल्स' का सक्रिय होने में समरूपता है। एक व्यक्ति की पीड़ा को की अनुभूति दूसरे व्यक्ति में होना 'अद्वैत' सिद्धांत पुष्ट करता है। वैज्ञानिक त्वचा को अद्वैत में द्वैत का कारक मानते हैं। भारतीय दर्शन में इस द्वैत भाव का कारक 'अहं' माना जाता है।

साधक जब योग साधना से अपने अहं को विगलित कर लेता है तब वह भौतिक त्वचा के सीमा बंधन को पार कर अद्वैत भाव को प्राप्त होता है। वेदान्त के इस अद्वैत भाव को चारों ओर विस्तारित करने वाले आदिगुरू शंकराचार्य जी ने, केवल इस दर्शन का प्रतिपादन और विस्तार ही नहीं किया; उन्होंने इस अद्वैत भाव को धारण भी किया-

कहते हैं वे अपने अंतिम समय में जब वे हिमालय में ऊपर और ऊपर चलते जा रहे थे, उनके शिष्यों ने उनके अधोवस्त्रों में रक्तस्राव देखा। शिष्यों ने आचार्य को सूचित कर उनसे उपचार हेतु वापस लौटने की प्रार्थना की किन्तु शंकर का उत्तर था- "रोग शरीर को है; मैं शरीर नहीं हूँ, मैं ब्रह्म हूँ- "अहं ब्रह्मास्मि"**!**

शंकर चलते गए...चलते गये, रुग्ण अनित्य शरीर छूट गया 'वे' एकाकार हो गये**!**

But you must not eat from the tree of the knowledge of good and evil, for when you eat from it you will certainly die.

(ईश्वर का ज्ञान के फल को खाने से विरत करना।)

नव संवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322,0522–6568011
पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा 2024

संरक्षक

न्यायमूर्ति डी के त्रिवेदी

अध्यक्ष

ए के त्रिपाठी, एडवोकेट

उपाध्यक्ष, सम्पादक

डॉ. डी एस शुक्ला

उपाध्यक्ष

कु.प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा

महासचिव / कोषाध्यक्ष

राकेश शुक्ला

उपसचिव

कृपाशंकर दीक्षित

वरिष्ठ सदस्य

आर पी अवस्थी
एडवोकेट

विशिष्ट सदस्य

डॉ. वी के मिश्रा

धीरेन्द्र कुमार
दीक्षित, एडवोकेट

उप-सम्पादक

डॉ. अनुराग दीक्षित

दोहे

– डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी

दौलत डोलत फिरत है, कीजै न अभिमान।
दौलत के लत से गिरत, जग जो करत गुमान।।

साँसन की डोरी चलै, रुकै न या दिन रात।
या के रुकबे से प्रलय, होत तुरत कस बात।।

पाहुन सब संसार के, चार दिन के यार।
सबहीं सो यह विनय है, प्रभु का यह उपकार।।

कर लीजै सुमरन यहाँ, सज्जन को यही काम।
मूरत छवि उर में धरो, मिलिहै तब विश्राम।।

आवन की सबको पता, जावन है अनजान।
नाम सुमिर को हाथ गहि, बड़ा यही है निदान।।

योग सांख्य अति कठिन है, ज्ञान ध्यान गम्भीर।
राम रटन करते रहो, सुधिरै सब तकदीर।।

जलवा जलवा सब करैं, जानौ या कच्ची बात।
या से बढ़त गुरूर नित, पाप बढ़त दिन रात।।

चलन चलन सब कोई कहै, चाल न देखे कोइ।
अन्तर्तम जो देख ले, भव नहिं आवन होइ।।

अवध विराजित हो गये, रघुकुल बाल ललाम।
ग्यान खानि शिव मुदित हैं, देखैं मथुरा धाम।।

मालिक ते माँगत 'अश्वनी', दीजै ऐसी चाह।
मैं देखूँ तसवीर तब, मिलै जगत में राह।।

बाजपेयी भवन, निकट रेलवे क्रासिंग, किरन कालेज, बांदा (उ.प्र.)

वसुधैव कुटुंबकम

– **मुक्ता द्विवेदी**

नील गगन सी फैली धरती
उन्मुक्त पवन सी आशाएं

सीमाओं के बंधन ना हो
लिखे प्रेम की परिभाषाएं

संपूर्ण जगत एक आंगन सा हो सिंचित हो जिसमें विविध कुसुमों की क्यारी,
महकी महकी वसुंधरा हो, इंद्रधनुषी फुलवारी

रूप अलग हो रंग बिलग, बोलचाल का ढंग अलग
विविधताओं के संगम की, प्रेम से सींचें हरियाली

कुटुंब मेरा एक वट वृक्ष सा, झूमे इसमें अन गिन शाखाएं।
भांति-भांति पक्षी के कलरव से हो गुंजित धरा-गगन चहूं ओर दिशाएं

भुलाकर बैर सारे और सारी विडम्बनाएं
एकत्व का एक स्वर हो, एकत्व की भावनाएं।

•

माँ

– डॉ. दिनेश चन्द्र अवस्थी

मेरी माँ थीं पढ़ीं पर, गिनती में थीं दीन।
रोटी देतीं पाँच पर, गिनती थीं वे तीन।।

माँ जब लिखिए तो लगे, एक चंद्र एक विंदु।
लेटा बच्चा विंदु है, माँ की गोदी इंदु।।

माँएं सब हैं माँगतीं, बेटा श्रवण कुमार।
पति यदि श्रवण कुमार हो, तो करतीं तकरार।।

पत्नी

पति है टायर की तरह, पत्नी होती ट्यूब।
जब दोनों ही ठीक हों, चले साइकिल ठीक।।

मेरे खाने में कभी, निकला करता बाल।
कायम रखती इस तरह, वे अपना इकबाल।।

पत्नी है अर्धांगिनी, बिन पत्नी सब सून।
पत्नी बिना न मन लगे, घर या देहरादून।।

पत्नी दुर्गा बनेगी, अगर बनोगे शेर।
नारायण बन कर रहो, वे दाबेंगी पैर।।

पत्नी ने मुझसे कहा, लेकर मेरा हाथ।
भले एक से दो सदा, भले गधा हो साथ।।

सिटी वेटिकन मानिए, अपने घर को आप।
पत्नी घर की पोप है, ये मानो चुपचाप।।

•

वर्ष 2023 होली मिलन में सहयोग करने वालों के नाम

1.	गंगा प्रसाद तिवारी	रु. 6000/-
2.	पी के दीक्षित	रु. 5100/-
3.	मीनू द्विवेदी	रु. 5000/-
4.	ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्र स्मृति स्व. पिता पं. आर के मिश्र 'मान भाई'	रु. 5000/-
5.	श्रीमती मिथलेश आर के मिश्र स्मृति पुत्री सोनल मिश्रा	रु. 3500/-
6.	सर्जन परेश शुक्ला	रु. 3500/-
7.	चीफ इं देवेश शुक्ला	रु. 3500/-
8.	श्रीमती शैल मिश्रा	रु. 4000/-
9.	श्रीमती मंजुला दीक्षित	रु. 3500/-
10.	श्रीमती स्वाती पांडे	रु. 3500/-
11.	श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति नाना स्व. रायबहादुर पं. उदित नारायण पाठक ऑफ सिसेंडी स्टेट	रु. 2000/-
12.	श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति पिता जी स्व. जी.पी. शुक्ला	रु. 2000/-
13.	श्री ए के त्रिपाठी	रु. 2000/-
14.	डा डी एस शुक्ला स्मृति मौसी स्व. उर्मिला मिश्रा	रु. 2000/-
15.	श्री आशुतोष बाजपेयी स्मृति पिता स्व. उमाशंकर बाजपेयी	रु. 1000/-
16.	श्री आशुतोष शुक्ला स्मृति माता श्रीमती विनोदिनी बाजपेयी	रु. 1000/-
17.	कु. प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा एडवोकेट	रु. 1000/-
18.	श्रीमती मनोरमा तिवारी, जयपुर स्मृति पुत्री स्व. डा.अर्चना तिवारी	रु. 1000/-
19.	डा डी एस शुक्ला द्वारा पिता की श्रद्धांजलि हेतु	रु. 2000/-

नगद पुरुस्कार

कु. संस्कृति मिश्रा पी एस ए इंटर कालेज, खैराबाद, सीतापुर 4000/-

कु. आयुषी तिवारी के के वी कालेज लखनऊ 3500/-

मंच पर पुरुस्कार पाने वाली छात्रायें- राशि रु. 1000/-

1- प्रज्ञा मनोज शुक्ला बी.ए.-1 क्रिश्चियन कालेज लखनऊ

2- अपूर्वा निर्मल शुक्ला कक्षा xii, बालनिकुंज इंग्लिश स्कूल

3- साक्षी संतोष(स्व.) मिश्र कक्षा xii, कस्तूरबा कालेज, लखनऊ

4- निहारिका मिश्रा वेदरत्न मिश्रा, एम.ए. I संतोष कुमार महाविद्यालय

5- अनुष्का वेदरत्न मिश्रा, xi ग्लोबल स्कूल बक्शी का तालाब

6- अपर्णा संजीवरत्न मिश्रा, viii ग्लोबल स्कूल, बक्शी का तालाब

7- अनन्या संजीवरत्न मिश्रा, vii ग्लोबल स्कूल, बक्शी का तालाब

8- मानसी संतोष कुमार मिश्रा, बी.ए. 3rd, नारी शिक्षा निकेतन महाविद्यालय

साइकिल पाने वाली छात्राओं के नाम

1- निकिता तिवारी कक्षा vi दयानंद कालेज इंदिरा नगर लखनऊ

2- मानसी मिश्रा कक्षा x ध्रुव वंशी एच एस स्कूल लखनऊ

3- मोनी तिवारी कक्षा vii गुसाईंगंज लखनऊ

4- हिमांशी शुक्ला कक्षा 4 जे के पब्लिक स्कूल मानक नगर, लखनऊ

5- आर्या पंकज मिश्रा कक्षा viii एस आर ग्लोबल स्कूल बक्शी का तालाब

6- पूर्णिमा बाजपेयी बी.ए.-1, ए.पी. मिश्रा डिग्री कालेज, फतेहपुर चौरासी, उन्नाव

7- काव्या त्रिपाठी, सुजानपुरा, आलमबाग, लखनऊ

8- हर्षिता मिश्रा vii हायर सेकेंडरी स्कूल सताँव, रायबरेली

9- दिव्यांशी त्रिवेदी, कक्षा ix श्रीकृष्णा इंटर कालेज, रुस्तमपुर, रायबरेली

सूची एवं पोस्टल एड्रेस कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल

3, संरक्षक-अनुदान **रु. 10000.00 मात्र**

1- न्यायमूर्ति श्री डी के त्रिवेदी (अव.प्रा.) 9415152086, लखनऊ 226010
2- श्रीमती नीरा शर्मा पत्नी डा राजीव शर्मा आई ए एस
3- डा राजीव शर्मा आई ए एस, 9810722663
4- श्रीमती रोली तिवारी, 9839882747, 7007369467

8, वाणी पुत्र **अनुदान रु. 5000.00**

1- डा यू डी शुक्ल (स्व) लखनऊ
2- डा वी के मिश्रा, मोबा. 9415020426, लखनऊ-226016
3- स्व. इं. एस. एन. मिश्रा, अलीगंज, लखनऊ-226024
4- ललित कुमार बाजपेयी 9415034368, रायबरेली
5- उदयन शर्मा s/o डा राजीव शर्मा, लखनऊ-226001
6- श्री प्रमोद शंकर शुक्ल 9450558657
7- इं. देवेश शुक्ल 9450591538, लखनऊ
8- हरि मोहन बाजपेयी 'माधव' 9415410407, लखनऊ

3, अति-विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु. 3000.00**

1- श्री रामजी मिश्र, 9450379054, खैराबाद, सीतापुर-261131
2- आर्क. अनुराग शुक्ला, 9415580950, लखनऊ-226002
3- श्रीमती सुमन शुक्ला, 9838005179, लखनऊ

13, विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु. 2000.00**

4- श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी, 9335159363, लखनऊ-226012
5- श्री उपेंद्र मिश्र, 9415788855, लखनऊ-226010
6- डा आर एस बाजपेयी
7- डा आर के मिश्र, 9415012333
8- पं विनोद बिहारी दीक्षित (स्व)

9- स्व. पं. विजय शंकर शुक्ल (स्व), लखनऊ-226016

10- डी के बाजपेयी, 9621479044, लखनऊ-226002

11- प्रो पी पी त्रिपाठी, 9450551394, बलरामपुर-271201

12- डा प्रांजल त्रिपाठी, 9919879799, बलरामपुर-271201

13- डा निधि त्रिपाठी, बलरामपुर-271201

14- डा बीएन तिवारी आई ए एस

15- मीरा शिवेन्दु शुक्ल, 9721756269, कानपुर

16- लक्ष्मीकान्त शुक्ला, रायबरेली रोड, लखनऊ-226002

17- पी के दीक्षित, 7905913042, 9838922347, लखनऊ-226005

18- सू. मेज. (रिटा.) आर एन तिवारी 9893555368, लखनऊ-226006

19- प्रवीण शुक्ला, 9919331095, रायबरेली-229001

20- श्रीमती माधुरी शुक्ला, 9151190422, कानपुर

57. आजीवन सदस्य अनुदान रु. 1000.00

21- श्री जितेंद्र कुमार त्रिपाठी, 9307222027, लखनऊ

22- पं. भारतेन्दु त्रिवेदी, 9451194337, सीतापुर-261001

23- श्री रमा रमण त्रिवेदी, सीतापुर-261001

24- श्री के के त्रिवेदी, 9415020510, लखनऊ-226006

25- श्री आर सी त्रिपाठी, 9415012040, लखनऊ-226016

26- श्री नवीन कुमार शुक्ल, 950666731, अलीगंज-226024

27- श्रीमति मीनू द्विवेदी, 9336166380, कानपुर-208002

28- इं बसंत राम दीक्षित, 9335075482, लखनऊ-226005

29- श्री सुधीर कुमार पांडे, 9415521031, लखनऊ

30- एडवो. कु. प्रेमप्रकाशिनी मिश्र, 9415026087, लखनऊ

31- श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, 9415524848, सीतापुर-261001

32- ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र, 9454592411, शारदा नगर, लखनऊ-226002

33- श्री कृपा शंकर दीक्षित, 9455713711, लखनऊ

34- डा अनुराग तिवारी, 9415735630, कानपुर-208002

35- श्री आर के शुक्ल, 9919623121, लखनऊ-226002

36- डा आर सी मिश्र 05226521353, लखनऊ-226020

37- श्री विनोद कुमार मिश्र, 9919740633

38- श्री राजकिशोर अवस्थी, 9956084970, लखनऊ-226023

39- डा पी एन अवस्थी, 94153308555, लखनऊ

40- श्री कौशल किशोर शुक्ल, 9335968454, आलमबाग, लखनऊ-226005

41- श्री विनय कुमार शुक्ल, 9450350878, कानपुर देहात-209303

42- श्री मनीकान्त अवस्थी, 7607479838, लखनऊ

43- श्रीमती अनुराधा शुक्ला पत्नी त्रयंबकेश्वर प्रसाद शुक्ला, रायबरेली

44- इं. स्व. के बी शुक्ल, 9415004466, लखनऊ-226010

45- श्रीमति हेमा दिनेश मिश्रा, 9721975102, लखनऊ

46- श्री ब्रह्म शंकर दीक्षित, 9415049660, लखनऊ

47- श्री शंभु प्रसाद पांडे, 9450717711, मलिहाबाद, लखनऊ

48- इं एस एस शुक्ल, 9450761403, लखनऊ

49- श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी, मो. 9415115951, लखनऊ-226016

50- श्री ज्ञान सिंधु पांडे, 8765531281, अलीगंज, लखनऊ-226024

51- श्री डी एन दुबे आई ए एस, 9415408018, लखनऊ- 226016

52- श्री श्रीकांत दीक्षित, 9415766901, लखनऊ-226024

53- उमेश चंद्र मिश्र, 9305245599, लखनऊ

54- डा ओंकार नाथ मिश्रा, 9415022957, लखनऊ-226010

55- श्री अश्वनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर-212601

56- श्री राघवेंद्र मिश्र, 9918001628, लखनऊ-226010

57- प्रफुल्ल कुमार पाठक, 7388192190, रायबरेली

58- श्री आत्म प्रकाश मिश्र, 9415018200, लखनऊ-226010

59- श्री समीर बाजपेयी, 9415306363, इलाहाबाद-211007

60- श्री राकिश कुमार मिश्र, 9335209896, लखनऊ-226003

61- डा एस के त्रिपाठी, 9335917261, लखनऊ-226002

62- श्री राजेश नाथ मिश्र, 9454292354, लखनऊ-226004

63- मालती विजय शंकर मिश्रा, 9336704017, लखनऊ-226016

64- राम कृपाल त्रिपाठी, विनायकपुर, लखनऊ

65- सुरेन्द्र नाथ त्रिवेदी, 93352230767, लखनऊ-226016

66- राकेश कुमार शुक्ला, 9005409001, लखनऊ

67- विमल कुमार जेटली, 9451246381, ठाकुरगंज, लखनऊ-226003

68- श्री एस के मिश्रा, 211 बी, पार्क इंफीनिया, उदयन ई, एल्डिको, लखनऊ-226025

69- डा. परेश शुक्ला 0941531745, 9793346656, कानपुर रोड, लखनऊ-226012

70- डा. एस एन शुक्ला, 9415464288, लखनऊ

71- डा. राकेश शुक्ला (न्यूरोफिजीशियन), लखनऊ

72- सर्वेश मिश्रा, 9086761122, लखनऊ

73- डा अनुराग दीक्षित, 7007904857, लखनऊ-226010

74- सुशील दीक्षित, 9415025097

75- गंगा प्रसाद तिवारी, 8318859466

76- शारदा प्रसाद तिवारी, 9305421993

77- श्रीमती स्नेहलता तिवारी, जानकीपुरम विस्तार, लखनऊ-226021

78- सौमित्र बाजपेयी, 9473837390, लखनऊ-226028

79- अखिलेश बाजपेयी, 9415023874, कानपुर रोड, लखनऊ-226012

80- श्रीमती मंजुला दीक्षित, लखनऊ

81- स्वस्ती पांडे, लखनऊ

बाहरी प्रान्तों के सदस्य

विशिष्ट सदस्य

1- अनामिका शर्मा, 09990455986, नई दिल्ली, 110017

आजीवन सदस्य

2- डा. आर के त्रिपाठी, देहरादून, उ.खंड, मो. 09935478815

3- नीरज त्रिवेदी, मो. 09837077564, हरिद्वार (उ.खंड)-249408

4- यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली-93, मो. 98184343377

5- राम अवस्थी, मो. 09820026914, नवी मुंबई-400708, महाराष्ट्र

6- अशोक कुमार तिवारी, मो. 09300104481, जबलपुर, म.प्र.-482003

7- अशोक कुमार पाठक, मो. 09407290639, पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.-461775

8- वैज्ञानिक अलका दीक्षित, 011 32320268, तीमरपुर, दिल्ली-110054

9- श्रीमती सविता दुबे, W/o मोहन प्रसाद, धारवाड़, कर्नाटक-580003

10- देवेन्द्र कुमार शुक्ला, मो. 09414075174, जयपुर, राजस्थान-302021

11- पं शिवशंकर तिवारी, मो. 09490119947, 090300511007, सिकन्दराबाद, आन्ध्र प्रदेश-500003

12- शिशिर कुमार बाजपेयी पुत्र स्व. बी एन बाजपेयी, मो. 09899041178, फरीदाबाद, हरियाणा-121008

13 - प्रदीप चंद्र तिवारी, मो. 094140977679, ई-मेल misra.suman07@yahoo.com, उदयपुर, राजस्थान-313002

14- डा. अश्वनी कुमार बाजपेयी, छतरपुर, मध्य प्रदेश

15- श्रीमति मनोरमा त्रिपाठी, 9783160465, जयपुर, राजस्थान-302017

16- श्रीमती अर्चना तिवारी, TALCHAR, ANGUL, ODISHA-759101

दूरस्थ देश के सदस्य

आस्ट्रेलिया

17- विजय शुक्ला C/o डा. गिरीश चन्द्र शुक्ला

अफ्रीका, युगांडा (अति विशिष्ट सदस्य)

18- जितेंद्र पांडे, युगांडा 9638145145, 876547694

19- अनुराग शुक्ला, मैरीलैंड, वाशिंगटन, सयुंक्त राष्ट्र अमेरिका

एक ग़ज़ल

– इंदु प्रकाश द्विवेदी

कोई शिकवा है तो आपस में करना।
जमाने से कोई चर्चा न करना।

झुके ये सर अकीदत में ही अपना,
किसी मगरूर को सजदा न करना।

बहुत ऊंचे उठो छू लो गगन को,
जमीं से खत्म पर रिश्ता न करना।

महक पाई है तो महकाओ दुनिया,
महक का तुम कभी सौदा न करना।

किसी को गैर मत करना यहां पर,
भले सबको यहाँ अपना न कहना।

पूर्व निदेशक पुरातत्व विभाग, उ.प्र.

•

संदेशखाली और महाराष्ट्र का कस्तूरबा नगर

- डॉ. डी.एस. शुक्ला

बताने की आवश्यकता नहीं कि सन्देशखाली चर्चा में क्यों है? संदेशखाली में हर दिन हर रात महिलाओं की अस्मिता तार-तार होती रही। इक्कीसवीं सदी में भी पुलिस, प्रशासन इन जघन्य घटनाओं का संज्ञान नहीं लेते। एक टी वी चैनल के अनुसार वहां की राजनैतिक इकाई का पंचतंत्र के सिंह के भांति शासन चलता है। वे किसी भी परिवार की महिला को बुला कर या घसीट कर बलात्कार करने के लिए स्वतन्त्र हैं। इसके अलावा लूट-मार वसूली तो अपराध माने ही नहीं जाते। प्रतिरोध करने पर सामूहिक हत्या, आगजनी और बलात्कार। पुलिस प्रशासन से कोई उम्मीद न होने के कारण जनता चुपचाप सहन कर रही है।

इसी प्रकार तीन दशक पहले महाराष्ट्र की एक कस्तूरबा नगर नामक दलित बस्ती में भी यही तांडव हो रहा था। झोपडपट्टी में अक्कू यादव एक सीरियल किलर रेपिस्ट भय का पर्याय बन चुका था। आये दिन वह घर में घुस कर महिला से गैंग रेप करता था। विरोध करने अथवा पुलिस में रिपोर्ट करने पर अक्कू बलात्कार हत्या आगजनी कर सारी बस्ती को प्रताड़ित करता। पुलिस भी केस दर्ज न कर पीडिता को ही मुँह बंद करने को कहती थी। अक्कू के पैसे ने पुलिस के कर्तव्य बोध को कुंद कर रखा था।

अक्कू के विरुद्ध जनमत न बन सके इसलिए उसने लोगों का आपस में मिलाने की मुनादी करा रखी थी।

एक दिन अक्कू और उसके दल ने एक घर में घुस कर पति के सामने ही उसकी पत्नी का गैंग रेप करने के बाद मुँह बंद करने की धमकी देता हुआ चला गया। उस दिन पड़ोस के नारायणे परिवार की बेटी उषा शहर से एमबीए पूरा करके आई थी। उस युवती ने अक्कू के फरमान के बावजूद अत्याचार के विरोध में बस्ती को एकजुट होने का आह्वान किया।

विरोध और अक्कू का!? अक्कू साथियों के साथ घर में घुस कर उषा को बाल से घसीटते हुए चेहरे पर एसिड डालने को उद्यत हो गया। पिता के

गिड़गिड़ाने पर उसने उषा को छोड़ बलात्कार की धमकी दी। उषा अक्कू की धमकी से डरी नहीं। उसने झुग्गी का दरवाजा बंद कर, पास रखे गैस सिलेंडर ऑन कर ट्यूब निकाल दिया। फैलती हुई गैस के बीच उसने माचिस निकाल कर अक्कू से कहा कि वह सबको भून कर खुद मर जाने में परहेज नहीं करेगी।

रिसती हुई गैस और माचिस के साथ उषा की मुद्रा से भयभीत होकर अक्कू अपने साथियों के साथ पहली बार कायरों की तरह भागा।

भीड़ ने एहसास किया कि अक्कू भी डरता है। फिर क्या था, भीड़ ने भागते हुए अक्कू और उसके गैंग का पीछा किया पर अक्कू तो किसी तरह भाग गया। आक्रोशित भीड़ ने अक्कू के घर में आग लगा दी। कई दिनों तक भीड़ अक्कू को खोजती रही। शिकारी शिकार से भयभीत था। भीड़ के गुस्से से बचने के लिए अक्कू पुलिस की शरण में जा छुपा। पुलिस ने अपना हक अदा किया।

अगले दिन अक्कू अपने वकील और पुलिस अभिरक्षा में लीगल प्रोटेक्शन के लिए कोर्ट पहुंचा। कोर्ट रूम बस्ती की महिलाओं से खचाखच भरा था। कोर्ट रूम में अपने खिलाफ बयान देने आई महिलाओं को देख अक्कू उन्हें वहीं धमकाने लगा। महिलाओं का सब्र टूट गया। कोर्ट रूम में मौजूद लगभग 200 से अधिक महिलायें अक्कू पर टूट पडीं। उन्होंने अक्कू के मुँह पर लाल मिर्च पाउडर झोंक कर डंडे चप्पल और किचेन नाइफ से हमला कर दिया।

विटनेस बॉक्स में पुलिस को अक्कू की लाश मिली। अक्कू के शरीर पर लात-घूंसों के अलावा सत्तर चाकू के घाव थे। उसका शिश्न जड़ से कटा पाया गया।

महिलाओं ने अदालत में सामूहिक रूप से अक्कू की हत्या कुबूल की। सभी महिलायें गिरफ्तार हो गईं किन्तु स्पोंटेनियस क्राउड वायलेंस (भीड़ द्वारा अप्रत्याशित एकाएक सामूहिक आक्रोश) में किसी एक पर दोष सिद्ध न होने के कारण सब महिलाओं की बेल हो गई।

पुलिस ने उषा नारायणे व एक अन्य महिला को भीड़ को उकसा कर हत्या करवाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। उषा की बेल पहली पेशी में ही हो गई। इसके बावजूद उषा से खार खाई पुलिस ने जांच के दौरान उसे

शहर से बाहर जाने से निरुद्ध कर दिया। नतीजा उषा का एमबीए का कैरियर खत्म हो गया।

पर दुर्दम्य साहस की उषा की शिक्षा केवल नौकरी के लिए नहीं थी। वह सही मायने में शिक्षित थी। उसने उस झोपडपट्टी की महिलाओं को बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, सिखाई। बस्ती में गिनी-चुनी शिक्षित महिलाओं को कम्प्यूटर ट्रेनिंग करा उन्हें आत्मनिर्भर बनाया। अतिरिक्त आमदनी से बस्ती के साथ उनके रहने का स्तर उठाया। उषा के इन प्रयासों के बाद उस निर्धन दलित झोपडपट्टी की महिलाओं की आमदनी और आत्मविश्वास बढ़ा। अब वे अबला नहीं थीं। उषा के इस प्रयास में उसे बिल क्लिंटन फाउन्डेशन ने सहायता की।

दस वर्ष बाद अदालत ने उषा नारायणे को अक्कू मर्डर में निर्दोष पाया किन्तु उसके जीवन के दस बहुमूल्य वर्ष तो नष्ट हो चुके थे। एक प्रेस साक्षात्कार में उषा ने बताया- "जो बीत गया उसके बारे में क्या सोचना? जो ईश्वरीय विधान था वही हुआ। मुझे अपने कैरियर बर्बाद होने का कोई अफसोस नहीं। मुझे खुशी है कि मेरी वजह से समाज एक आततायी से मुक्त हुआ। महिलायें सशक्त हुईं, उनमें जीने का सलीका और आत्मविश्वास जागा। मेरे लिए यही बहुत है"।

कस्तूरबा नगर की महिलाओं की शौर्यगाथा के बारे में कितनी महिलायें जान पायीं? दोनों स्थानों में केवल एक फर्क है। संदेशखाली में कोई उषा नहीं है**!**

•

आपराधिक अन्वेषण में डी एन ए परीक्षण

– **तिलक शुक्ला,** रायबरेली

आपस के झगड़े से उद्विग्न हमारा नायक आज गाँव में अपने ननिहाल आया था। जाड़े के दिन थे। अलसुबह हल्की हल्की धूप का आनंद लेते हुये, न चाहते हुये भी उसका मन उद्विग्नता की जड़ पर चला गया.....

वह एक स्वस्थ आकर्षक युवा था। घर से भी संपन्न था। अतः कालेज और मोहल्ले की बालाओं की प्रशंसा-शुभ-दृष्टि का केन्द्र था। वह कालेज में अपने अफेयर्स की वजह से चर्चा में रहता था। इन सब विशेषताओं के होते हुये भी वह अपनी जान-पहचान और मोहल्ले के अफेयर से सदा बचता था। जान-पहचान और मोहल्ले के अफेयर्स कभी भी काम्पलीकेशन का कारण बन सकते थे। ऐसे लोगों केवल एक 'काम्पलीकेशन' को ही एवाएड करते हैं; और वह है- शादी**!**

आज कल तो निर्बाध मांसल सुख ही परम ध्येय है। दाम्पत्य जीवन के सभी सुख, वह भी वैवाहिक जिम्मेदारियों के बगैर**!** इस दायित्वविहीन उपभोगी प्रवृत्ति का नाम है 'लिव-इन रिलेशनशिप'।

इस रिलेशनशिप के दौरान यदि दुर्भाग्य या असावधानी से नन्हीं जान ने जन्म ले लिया, उस स्थिति में पुरुष हाथ झाड़ कर अलग हो जाता था। बदनामी के साथ सारी जिम्मेदारी महिला पर आन पड़ती थी किन्तु न्यायपालिका ने इस दायित्वविहीन रिलेशनशिप से पुरुष को भी, दायित्व से बाँध दिया। जज साहब ने रूलिंग दी कि इस लिव-इन सम्बन्ध से उत्पन्न संतान के जन्म में स्त्री और पुरुष दोनों बराबर के सहभागी हैं। भरण-पोषण के दायित्व से पुरुष केवल इस आधार पर भाग नहीं सकता कि संतान वैध दाम्पत्य संबंधों से नहीं जन्मी।

यह एक ग्राउंड-ब्रेकिंग निर्णय था। उन्मुक्त आनन्द के सहभागियों को आनंद के प्रसाद को भी पूर्ण दायित्व से स्वीकारना होगा किन्तु इस निर्णय से क्या परिवार बन या बच सकेगा? यह प्रश्न अभी अनुत्तरित है।

तो हुआ यों कि उन्मुक्त विचारों वाले हमारे नायक का अपने जैसी भोगाकांक्षी कन्या से संपर्क हुआ। दोनों केवल भौतिक सुख की अभिलाषा से एक दूसरे के निकट आये थे। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार प्यार श्रृंगार (सेक्स) से मस्तिष्क में

'आनंद दायक हारमोंस' (प्लेजर हारमोन्स) रिलीज होते हैं जो प्रेमी-प्रेमियों के बीच लगाव उत्पन्न करते हैं। आज की प्रैक्टिकल पीढ़ी इस लगाव से दूरी बना कर रखती है। फिर कभी-कभी अनचाहा 'राग' (लगाव या मोह) उत्पन्न हो ही जाता है।

यह राग यदि एकतरफा होता है तो जटिल स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी ही कुछ जटिलता इस सम्बन्ध में हमारे नायक के साथ भी आन खड़ी हुई थी। जटिलता ने उद्विग्नता को जन्म दिया। इस उद्विग्नता परेशान होकर नायक शांति की खोज में, सुदूर अपने गाँव के ननिहाल आया था।

पुराने रस्मो-रिवाज के शादीशुदा लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि इसमें दिक्कत क्या? शादी कर लो! पर इक्कीसवीं सदी में इतना सिम्पल नहीं होता। टिपिकल 'मर्द' की भांति बाहर भी मुँह मारते रहना चाहता है। यह भी चल जाता अगर पत्नी घर-गृहस्थी व बच्चों में बिजी होकर पति की इन 'आउट-डोर एक्टिविटीज' से अनभिज्ञ अथवा तटस्थ रहे। किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में कन्या भी इसी मानसिकता की थी। वह भी नायक के अलावा कई मित्रों से अंतरंगता को मेंटेन रखना चाहती थी। यानी फिक्स्ड डिपोजिट के साथ कई करेंट एकाउंट की सुविधा; वह भी पैन या आधार की बाध्यता के बिना।

पेंच असल में यही फँस गया जिसने नायक को अन्दर तक उद्विग्न कर डाला था। अधिनायकवादी पुरुष अहं में अपनी पत्नी को वह स्वतंत्रता नहीं दे सकता, जिसे वह स्वयं के लिये चाहता है...

"हुजूर देखिये, अपनी हवेली के सामने के बंजर में चिकवे मरे बैल की खाल निकालने के बाद उसकी लाश वहीं छोड़कर भागे जा रहे हैं। थोड़ी देर में गिद्ध और गाँव के कुत्ते छीछालेदर फैलाने लगेंगे", की आवाज से नायक झटके से वर्तमान में लौटा। तभी नाना की रुआबदार आवाज उसके कानों में गूँज उठी- "मारो स्साले को!"

जमींदार (भूतपूर्व) की ललकार सुनते ही कई हरकारे साइकिल पर जाते चिकवे को पकड़ने दौड़ पड़े किन्तु एक्शन और रिएक्शन के बीच के अंतर का फायदा उठाते हुये चिकवा काफी दूर निकल चुका था। खलनायक चिकवा ने जमींदार के हरकारों के अपशब्दों पर ध्यान नहीं दिया। वह तेजी से साइकिल चला कर हरकारों की पहुँच के बाहर निकल गया। साइकिल भगाते हुये वह

चिल्ला कर बोला- "मरदूदों, सब्र करो। अभी आधे घंटे में गिद्ध सारी लहास चट कर जायेंगे। एक दो रोज में कंकाल भी फैक्ट्री वाले उठा लेंगे"।

पुराने दिन होते तो जमींदार चिकवे को घर से घसिटवा कर उसकी खाल में भुस्स भरवा देते। मगर अब गांधी बाबा के कारण उसे गरियाना भी सीकचे के पीछे भिजवा सकता था। मजबूरन जमींदार सब की माँ-बहन करते अन्दर चले गए।

हमारा नायक जिज्ञासावश वहीं चबूतरे पर बैठा रहा। सूर्य की प्रखर किरणों से आँखों को बचाने के लिये गोगल्स लगा कर वहीं बैठा रहा। वह यकीन नहीं कर पा रहा था कि इतने बड़े बैल की लाश को गिद्ध, कौव्वे इतनी जल्दी कैसे चट कर सकते हैं!

चिकवे के जाने के दस मिनट बाद ही कांव-कांव करते कौव्वे मंडराने लगे। थोड़ी ही देर में उसको क्षितिज पर काले-काले धब्बे नजर आने लगे। यह काले धब्बे गिद्ध थे जो ऊंचे आकाश से लाश देख कर कलेवा हेतु नीचे उतर रहे थे। आसमान में उड़ती चीलें भी आने लगीं।

गिद्धों के लैंड करते ही कौव्वे और चीलों ने बड़े अदब से उनके लिये स्थान छोड़ दिया। गिद्ध की लम्बी नुकीली चोंच सभी को भयभीत कर देती है। वैसे भी गिद्ध अपनी नुकीली चोंच से एक बार में ही जानवर का सबसे सख्त आवरण, उसकी खाल एक बार में ही फाड़ देती है। उसके बाद अन्दर के मुलायम माँस को चील कौव्वे भी आसानी से खा सकते हैं। थोड़ी देर में गिद्धों की भीड़ से विशाल बैल की विशाल काया दिखना बंद हो गई। गाँव के कुत्ते भी माँस गंध से खिंचे हुये बंजर में आ कर 'गिद्धभोज' में सम्मिलित हो गए। परजीवियों की इतनी बड़े संख्या से 'एक अनार सौ बीमार' वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। तभी हवेली के तीन चार मुस्टंडे डंडे लेकर हवेली के अहाते में डट गए। मुस्टंडों की इस सक्रियता का कारण पूछने के पहले ही नायक ने देखा कि गाँव के कुत्ते मृत बैल के शरीर का भाग मुँह में दबा कर गाँव की ओर वापस आने लगे। इन कुत्तों में हवेली के कुत्ते भी थे, जो मुँह में लोथड़े लिये हवेली की और आते दिखे। मुस्टंडों ने लाठी पटक कर इन कुत्तों को हवेली की ओर आने से हटका। नायक को इनकी मुस्तैदी का कारण समझ आया कि यदि लठैत कुत्तों को हवेली से दूर न रखते तो हवेली भी बैल के लोथड़ों से गुलजार हो जाती।

नायक ने घड़ी देखा। ठीक 45 मिनट में बैल का केवल कंकाल शेष बचा था। नायक प्रकृति के इन सफाई-कर्मियों की कार्यकुशलता से अभिभूत था। शहर में यह लाश बार-बार फोन करने के बाद भी 24 घंटे के पहले नहीं उठ सकती थी। इतनी देर में गली कूचे के कुत्ते सारा वातावरण नरक किये रहते।

गाँव के वातावरण में चिरपरिचित मौन और स्तब्धता लौट आई थी। नायक का ध्यान एक फिर अपनी परेशानी की ओर घूम गया। उसने सोचा कि बचे कंकाल से यह पता करना कठिन था कि वह गाय, बैल या भैंस का था। बैल के कंकाल को देख कर उसके मन में एक विचार कौंध गया। उसका मन अब किसी निश्चित निर्णय पर पहुँच चुका था। जब वह अपने कमरे में लौटा तो उसके मन में एक पूरा प्लान तैयार हो चुका था। अब उसके चहरे पर उद्विग्नता के स्थान पर एक निश्चयात्मक मुस्कान बिखरी थी।

अगले ही दिन वह नाना-नानी से जाने की परमीशन और दुआयें लेकर चल दिया।

हफ्ते भर के वियोग ने नायक और नायिका की खराश को काफी हद तक कम कर दिया था। दोनों बड़े प्रेम से मिले। नायिका ने महसूस किया कि गाँव से लौटने के बाद नायक के व्यवहार में नई गर्मी थी। इतनी गर्मी उसने अफेयर के शुरुआती दिनों में महसूस की थी। नायिका ने इसे गाँव के स्वास्थ्यकारी वातावरण का प्रभाव माना, और भरपूर सुख की अनुभूति लूटती रही।

सभी सुखों के बावजूद बिल्ली दूसरे घरों में झांकना बंद नहीं करती। ऐसी मार्जार प्रकृति के चलते नायक और नायिका अपने दूसरे मित्रों से इंटिमेट होने लगे। भेद खुलने पर फिर वही एक दूसरे पर बेवफाई का आरोप और फिर झगड़ा-टंटा प्रारंभ हो गया। दोनों का एक दूसरे पर हाथ उठाना तो पहले से ही रूटीन था किन्तु पहले पुरुष शक्ति कोमलांगी स्त्री पर भारी पड़ती थी। लेकिन इस बार नायिका अति वायलेंट हो कर नायक पर भारी पड गई जिससे नायक के शरीर से अधिक अहं चुटहिल हो गया। चुटहिल अहं को पाशविक होने में देर नहीं लगती।

पकडे जाने का भय 'फर्स्ट टाइम अफेंडर' को अपराध करने से विरत करता है किन्तु यदि वह आश्वस्त हो कि उसका पकड़ा जाना नामुमकिन है, तब उसे अपराध करने में कोई हिचक नहीं होती।

नायक ने भी यदि गाँव में बैल की लाश का इतना क्विक डिस्पोजल न देखा होता तो इतनी जल्दी अपराध करने को उद्यत न होता किन्तु यहाँ तो उसके पास रेडीमेड प्लान था। वह प्रकृति के मृत-परजीवियों की कुशलता से पूर्ण रूप परिचित हो चुका था।

नायक ने विनम्र होकर अपनी गलती मान ली। नायिका पहले चकित हुई फिर विजयी की भाँति उसने अपनी शर्तें पेश कीं। तय हुआ दोनों स्वभाववश यदि एक दूसरे के प्रति वफादार नहीं रह सकते तो दोनों को इतर संबंध बनाने की स्वेच्छा होगी। नायिका की अगली शर्त थी कि वह नायक की ब्याहता नहीं है, इसलिए नायक को उस पर हाथ उठाने का कोई अधिकार नहीं है।

इस पर नायक ने दिल फरेब मुस्कान के साथ पूंछा- "यदि मैं तुमसे शादी कर लूँ तब?"

नायिका ने उसके गले लिपटते हुये कहा- "भूल जाओ, हम दोनों शादी के लिये नहीं बने हैं। हम ऐसे ही अच्छे हैं।" नायिका के इस कथन ने उसके भाग्य पर मोहर लगा दी**!**

नायक समझ चुका था कि नायिका शादी के बाद भी सुधरने वाली नहीं है। उसने निर्णयात्मक रूप से नायिका की कोमल, उद्धत मांसलता को गिद्धों को अर्पित करने का प्लान तय कर लिया।

एक दिन नायक ने नायिका से भी गाँव के स्वास्थ्यकर वातावरण देखने को आमंत्रित किया। नायक की भाँति नायिका भी उत्फुल्ल होना चाहती थी अतः वह फौरन तैयार हो गयी।

xxxx

गिद्धों और कुत्तों द्वारा पूरे रूप से खाया हुआ कंकाल के गाँव के बंजर में पड़े होने की खबर पाकर हड्डी बटोरने वाले हड्डियां बटोरने पहुंचे। अनुभवहीन कर्मचारी हड्डियां बटोरने जा रहा था कि ठेकेदार की नजर कंकाल पर पडी। वह चौंक उठा**!** यह किसी ढोर-डंगर का न होकर मानव कंकाल था। अचरज था कि कंकाल का सर गायब था। अनुभवी ठेकेदार को यह मानव हत्या का मामला लगा। उसकी पहली स्वाभाविक प्रतिक्रिया चुपचाप निकल जाने की हुई। वह स्वयं तो इस मामले में अनभिज्ञ बना रह सकता था। आम आदमी थाने-पुलिस के

झंझट से दूर रहना चाहता है किन्तु फिर याद आया कि उसे गाँव वालों ने हड्डियां बटोरने बंजर की ओर जाते देखा अवश्य होगा। अब बिना किसी कंकाल के लौटने पर प्रश्न तो उठेंगे ही। फिर ऐसी लोमहर्षक घटना से दो चार होने के बाद अपने कर्मचारी की जुबान को वह कैसे रोक सकता है। यह सोच कर उसने इस घटना का ब्यौरा ग्राम प्रधान को बता कर छुट्टी पाई। जाते समय वह गाँव के चौकीदार को भी इसकी जानकारी देता गया।

फिर क्या था गाँव में खाकी वर्दी लाल, नीली बत्तियों वाली गाड़ियों की भीड़ लग गई। सरकारी भीड़ से दस गुना उत्सुक और जिज्ञासुओं की भीड़ आनन-फानन में एकत्र हो गई। एक अदना-सा अनजाना गाँव एकाएक अखबार और मीडिया की सुर्खियों में आ गया। भोले-भाले ग्रामीण भी इन्टरव्यू देते हुये बुद्धू बक्से पर अवतरित होने लगे।

इतनी शोहरत पाने के बाद तो केस स्पेशल क्राइम ब्रांच को रेफर होना ही था और रेफर हुआ भी। किन्तु सोचे-समझे वेल एक्जीक्यूटेड अपराध में क्राइम ब्रांच भी लाचार हो जाता है। मामला रफा-दफा हो गया। अपराध की केस फाइल और समाचार पत्रों में छपे अंक भी दाखिल-दफ्तर हो गये। हड्डियां केमिकल परीक्षण के लिये सील कर दी गईं। भंवरा फिर से कलियों पर मंडराने को स्वतन्त्र हो गया।

xxxx

छोटे शहरों में डाक्टरों का आज भी सम्मान है। शहर के सबसे पुराने अनुभवी डाक्टर जितना अपनी डाक्टरी के लिए विख्यात थे, उतने ही सोशल भी थे। शाम सात बजे के बाद मरीजों के समाप्त हो जाने के बाद उनकी क्लीनिक पर उनके मित्रगण उपस्थित हो जाते। डाक्टर की क्लीनिक एक मनोरंजन स्थल में तब्दील हो जाती। एक से डेढ़ घंटे मित्रों से गपशप के साथ शहर की चटपटी खबरों के साथ आजकल के हालाते-हाल पर भी तस्किरा होता रहता था।

इस मंडली में आजकल एक मर्डर का जिक्र चल रहा था। यहाँ के एक स्थानीय निवासी की पढ़ी लिखी खुले विचारों की बेटी, राजधानी में कार्यरत थी। कुछ दिन छात्रा छात्रावास में रहने के बाद वह किसी विधर्मी युवक के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रहने लगी थी। माँ बाप के विरोध की प्रतिक्रिया में

लिव-इन रिलेशनशिप छोड़ने के बजाय माँ-बाप से रिलेशन तोड़ना उसे अधिक सुविधाजनक लगा। माता-पिता को कभी-कभार बेटी के मित्रों से बेटी की 'खैरसल्लाह' मिलती रहती थी। पर एक दिन बेटी के मित्र ने फोन पर बताया कि उनकी बेटी राजधानी में नजर नहीं आ रही है। मित्र जानना चाहता था कि बेटी घर पर है क्या?

माता-पिता उद्विग्न हो उठे, उन्होंने राजधानी की पुलिस को सूचित किया। पुलिस की तफ्तीश से पता चला कि बेटी छः महीने से गायब है। शक के बिना पर उसके लिव-इन साथी से पूछताछ में एक युवक पर शक गहरा गया। यह युवक और कोई नहीं हमारी पहले बताई कहानी का नायक था।

सख्ती करने पर नायक तोते की तरह बोलने लगा। युवक ने स्वीकार किया कि उस लड़की का मर्डर करने के बाद उसको गाँव के बंजर में छोड़ दिया, जहां उसे गिद्ध-कौव्वे खा गए होंगे।

पुलिस ने अब सभी थानों से किसी लड़की के कंकाल मिलने वाले केस के बारे में जानना चाहा। इस छोटे से शहर में कंकाल मिलने की सूचना आई। लड़की के मर्डर की गुत्थी तो सुलझ गई। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार मृतका के गले को धारदार हथियार से काटा गया था। बिना सर के कंकाल की पहचान नहीं हो सकती। बिना पहचान निर्धारित किये युवक पर हत्या का मुकदमा नहीं सिद्ध होगा। खैर लौंडा कच्चे दिल का था। थर्ड डिग्री के पहले चरण में ही हिल गया। कटा हुआ सर गाँव के बाहर एक कुएं से बरामद हो गया।

आरोपित द्वारा अपराध की स्वीकारोक्ति, उसके बताये स्थान पर कंकाल का पाया जाना और तफ्तीश के दौरान आरोपित की निशानदेही पर कुएं से सर का मिलना उसके अपराधी होने का अकाट्य प्रमाण था। आरोपित के मालदार नाना ने उसके बचाव के लिए राजधानी से बड़े वकील खड़े किये थे। परन्तु वह वकील भी थोड़ी बहस के बाद केस के रुख को भांप बदनामी से बचने के लिए केस छोड़ गए। अब आरोपित के पक्ष में उस छोटे से शहर का एक अदना सा वकील ही रहा गया था।

वह अदना वकील भी डाक्टर साहब की बैठक में आता रहता था। डाक्टर साहब से सलाह भी लेता था। एक दिन डाक्टर की बैठक में लोगों ने वकील से

केस की प्रोग्रेस पूछी तो वह रुआंसा होकर बोला- "अब उसे फंदे से कोई नहीं बचा सकता। अब केवल उसकी सजा का दिन ही टाला जा सकता है। टाइम पास करने की नियत से मैंने मृतका और उसके पिता के डी एन ए मिलान की अर्जी लगा दी है। इसमें दो-तीन महीने तो लग ही जायेंगे"। कह कर हताशा में वह महफिल छोड कर चला गया।

डाक्टर साहब के चैंबर में बैठे कुछ लोग वकील की असफलता से द्रवित होकर "च्च-च्च" करने लगे।

इस पर डाक्टर साहब ने मुँह में लौंग डालते हुए कहा- "इसको सहानुभूति की जरूरत नहीं है। अनजाने में ही इसने केस जीत लिया"।

"केस जीत लिया"? क्लीनिक में बम फूटा।

"हाँ" डाक्टर साहब मुस्कराते हुए बोले- "लड़की का डी एन ए अपने पिता से मेल नहीं करेगा। रिपोर्ट निगेटिव आएगी"।

सबकी आँखों में प्रश्न और कौतूहल देख डाक्टर साहब ने बताया कि "पैटर्निटी इज नॉट श्योर, ओनली मैटर्निटी इज" (पितृत्व निश्चित नहीं होता, केवल मातृत्व ही सिद्ध है)। लड़की का पिता मेरा पेशेंट रहा है, इसको 'एजूस्पर्मिया' (वीर्य में शुक्राणुओं न होना) है। इसलिए वह लड़की का बायोलोजिकल पिता नहीं है। यह लड़की माँ-बाप की इकलौती संतान थी। माँ की मृत्यु के बाद इसके जींस पिता के जींस से मैच नहीं करेंगे और केस बेदाग छूट जायेगा"।

"और आरोपित की स्वीकारोक्ति?" सबने एक साथ प्रश्न किया।

इस डी एन ए रिपोर्ट के बाद आरोपित अपने अभी तक के बयान को पुलिस के थर्ड डिग्री के दबाव में दिया गया कह कर बच जायेगा। न्यायालय इसे पुलिस द्वारा एक भोले-भाले युवक को अनजाने कंकाल के केस में फंसाने की दुरभि संधि मान सकता है।

•

एक श्राप तो....

– **विनीता मिश्रा**

चलो उठा के आज सूर्य को
थाली पर रख लाते हैं
एक श्राप तो गौतम को भी
आज पलट दे आते हैं।

कुछ रीत बदल कर आते हैं
कुछ गीत बदलकर गाते हैं
एक श्राप तो मिलकर हम तुम
गौतम को दे आते हैं,
उस गौतम को दे आते हैं।

बन के पत्थर रह कर देख
पाषाणमना तू हो कर देख
रह जीवित और मर कर देख
तू भी जड़वत हो कर देख।
साथ में जुड़कर सभी पुरातन
प्रथा तोड़कर आते हैं।
एक श्राप तो गौतम को भी
आज पलट दे आते हैं।

रोना तेरी नियति नहीं है
एक बार तो रोकर देख,
पत्थर जैसी आंखों से
पत्थर के आंसू ढोकर देख।
सदियों का ये दंड तुझे
बस वर्षों का करवाते हैं

एक श्राप तो गौतम को भी
आज पलट दे आते हैं।

आंख रुके न भूमि गिरेंगे
कुछ दिन इनको सह कर देख,
ढलक आंख से अटक रुकेंगे
कहना उनसे बह कर देख।
कारागृह न देशनिकाला
यहीं सजा करवाते हैं।
एक श्राप तो गौतम को भी
आज पलट दे आते हैं।

न कोई कौशिक प्रेरित हो
किसी राम को लाने को
इतनी भी तू बाट न तकना
उद्धार स्वयं करवाने को
शाप विमोचन करने खातिर
शीघ्र पलट हम आते हैं
पर.....
एक श्राप तो गौतम को भी
आज पलट दे आते हैं।

•

एक और आहुति

(प्रथम दशक की घटना पर आधारित लघुकथा)

- महेश चन्द्र द्विवेदी

विनीता निर्धन परिवार की है परन्तु उच्च श्रेणी में बी.एड. पास होने के कारण उसे मेरे गांव के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका के पद पर एक माह पहले नियुक्ति मिली है। वह मेरे गांव वाले मकान के एक रिक्त कमरे में रहती है। मेरे गांव जाने पर जब वह मुझसे मिली तो मैंने उसे बधाई देते हुए हंसकर कह दिया था, "अब तो पहली तनखाह मिल गई होगी, मिठाई खिलाओ।"

"अंकल, मिठाई तो तब खिलाऊं जब तनखाह के पैसे हाथ में आयें। अभी तो मुझे तुरंत एक हजार रुपये का इन्तजाम करना है।" विनीता ने विषादपूर्ण स्वर में उत्तर दिया।

"वह किसलिये?" मैंने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

"बी.एस.ए. कार्यालय के बाबू ने साफ कह दिया है कि वह तब तक वेतन का चेक नहीं बनायेगा, जब तक उसे एक हजार रुपये नहीं मिल जायेंगे। दूसरे अध्यापकों से पूछताछ करने पर पता चला है कि बी.एस.ए. से शिकायत करने पर कोई कार्यवाही नहीं होगी क्योंकि बी.एस.ए. न केवल उस बाबू से मिले हुए हैं, वरन उसके जाति-विशेष के होने के कारण उससे डरते भी हैं।"

मुझे विनीता की स्थिति पर दया आई और बी.एस.ए. कार्यालय की स्थिति पर क्षोभ उत्पन्न हुआ। मैंने क्षोभ को दबाकर विनीता के विषाद को हल्का करने के उद्देश्य से कहा,

"अच्छा, यदि मैं तुम्हें एक हजार रुपये उधार दे दूं, तो मिठाई खिलाओगी?"

विनीता का चेहरा पूर्ववत रुक्ष ही रहा, पर वह चेहरे पर नकली मुस्कान लाकर कहने लगी,

"अंकल, सर्विस-बुक बनाने वाले बाबू ने मेरी सर्विस बुक बनाने के लिये पांच

हजार मांगे हैं। मांग को कम कर देने के लिये मेरे गिड़गिड़ाने पर वह बोला था कि यह तो पुराना रेट है। मैं चाहूँ तो बी.एस.ए. साहब से ही पूछ लूं, पर तब हो सकता है नया रेट देना पड़े। मेरा साहस बी.एस.ए. साहब से पूछने का तो नहीं हुआ, पर अन्य कर्मचारियों से पूछने पर उन्होंने राय दी कि पांच हजार दे देने में ही भलाई है, नहीं तो पता नहीं सर्विस बुक में क्या का क्या लिख दिया जाय। फिर तो लेने के देने पड़ सकते हैं और उसे ठीक कराने में कई गुना अधिक का खर्चा आ सकता है।"

एक निर्धन लड़की से ऐसे धन ऐंठे जाने की बात सुनकर मेरा क्रोध आपे से बाहर होने लगा था और मैंने विनीता का केस स्वयं ऊपर तक पहुंचाने और दोषियों को दंडित कराने की ठान ली। मैं उससे बोला, "तुम एक शिकायती पत्र लिखो। मैं लखनऊ जाकर शिक्षा मंत्री से मिलकर बी.एस.ए. और उसके बाबुओं की शिकायत करूंगा।"

लखनऊ वापस जाकर मैने शिक्षा मंत्री से अगले दिन 9 बजे प्रातः मिलने का समय ले लिया। अपने स्वभावानुसार मैं प्रातःकाल शीघ्र तैयार हो गया। अभी 9 बजने में डेढ़ घंटा शेष था अतः मैं सोफे पर बैठकर समाचार पत्र पढ़ने लगा। तीसरे पृष्ठ पर 'शिक्षा मंत्री को उतारकर उनकी गाड़ी मुख्य मंत्री आवास लाई गई' शीर्षक समाचार छपा था,

"परसों रात्रि शिक्षा मंत्री सरकारी गाड़ी से राजधानी से अपने घर जा रहे थे। लगभग 45 किलोमीटर दूर पहुंचने पर पीछे से आई मुख्य मंत्री आवास की एक गाड़ी ने उन्हें रोक लिया। उसमें बैठा सिक्योरिटी आफिसर उतरा और मंत्री जी को सैल्यूट कर बोला कि वह कृपया मुख्य मंत्री आवास से आई गाड़ी से अपने घर चले जांय, क्योंकि उनकी गाड़ी मुख्य मंत्री आवास जानी है। इसका कारण न तो सिक्योरिटी आफिसर ने बताया और न शिक्षा मंत्री ने पूछा। दूसरे दिन कुछ लोगों को सचिवालय के गलियारों में यह कहते अवश्य सुना गया है कि मन्त्री जी की कार की डिक्की में 'अन्डिस्क्लोज्ड (मुख्य मंत्री को न बताये हुए)' 3 करोड़ रुपये थे, जिसकी खबर लग जाने पर मुख्य मंत्री ने गाड़ी अपने घर मंगा ली थी।

मैंने शिक्षा मंत्री से मिलने का कार्यक्रम रद्द कर दिया है और विनीता का शिकायती-पत्र अग्नि में ऐसे स्वाहा कर दिया है जैसे इस देश के भ्रष्टाचार में एक और आहुति लगा रहा होऊँ।

•

अतवरिया का हँसिया

- डॉ. अनिल मिश्र
एडिशनल डायरेक्टर मेडिकल हेल्थ उ.प्र.

बात सन 1952 ई. की है। गोधूलि का समय था। ठाकुर सुरेन्द्र बहादुर सिंह के इकलौते पुत्र कुंवर ज्ञानेंद्र सिंह, कारिन्दा कालू के साथ अपने खलिहान से पैदल ही घर आ रहे थे। देखा कि बड़े वाले तालाब के भीटे पर उनकी कहारिन सुघरा के घर के सामने औरतों का मजमा लगा है। जरा ठहर कर पूछा, क्या बात है?

सुघरा बोलीं, कुछु नाहीं कुंवर बाबू, अतवरिया क हँसुआ हेराइ गयल बा। गिरावति के बेरी नाहीं रोवलेसि ह, अब भोंखारि फारि क रोवति बा। पिछलेहु बरिसि ई धाने के लवाई के समइ आपन हँसुआ हेरवउले रहलि अउर एहू साल आजु ऊ काम पूरा कइ देलेसि। अगर न गिरावति त लोग-बाग कहत न के एहि साल अतवरिया आपन हँसुआ हेरइबइ नाहीं कइलेसि। एकर इज्जति चलि जाति न कुंवर बाबू!

साँस खींचि के सुघरा फिर बोलीं, केतनी बार कहली के हँसुआ मुठिया के बल टेटे में खोंस लिहा करौ अउर धाने क बोझा कपारे पइ धइ के जरा धीरे-धीरे चलल करौ, लेकिनि ई हमार महतारी सुनइ तब त! कहलइ के टेटे में खोंसले परि मुठिया जाघीं में गड़लइ। धाने के बोझा के ऊप्पर रसरी में ही खोंसी अउर घोड़ी के नाईं सरपट दउडी, जइसे रेल छूटति होइ। फिरि त हँसुअवा के गिरहीं के रहल चाही आजु चाही कालि।

फिर दोनों आँखों से एक-एक आंसू टपकाते हुए सुघरा बोली, कुंवर बाबू! हमइ एकर फिकिर न हवइ, जब खेलावन सुनिहइ तब ओनके कइसन लागी। हँसुअवा तनी भोंथराइ गयल रहल, त ई सोचि क, के बहिनी के धान काटइ में जादा मेहनति पड़ति होई, अबही दुइ दिन पहिलवइ ऊ लइका बेचारा, लहुरिकी के बाऊ (बड़कू लोहार) के इहाँ भट्ठी पर चढ़वाइ क अपने समने शान चढ़वाइ क एके देले रहन हँ, अउर ओही पर मेहरारू राति भरि बडबडाइल के बहिनी के जादा मानन।

इतना बोलले के बाद सुघरा की भड़ास थोड़ा निकल गई थी। अतवरिया, जो अब भी सिसक रही थी, की तरफ देख कर बोलीं, अच्छा अब फफकब बंद करू। फिर दुलारी की ओर मुंह करके बोलीं, एनके भी केतनी बार समझउली कि ननद के साथे चलल कर लेकिन इहौ अपने मन क हवइ न। घूना के पतोहू से बतिआये खातिर एके छोडि के ओकरे साथे अलगे-अलगे हाथी के चालि चलिहइ। उहौ एकरे नईं दुइ तक पढ़ले हवइ न।

कहारिन सुघरा के बडके लइका खेलावन की मेहरारू दुलारी, पास के गाँव के कहार बलवाना की बिटिया थी। दर्जा दुइ तक पढ़े थीं और बड़ी चटक-मटक रहती थीं। हंसी-मजाक में तो जंवार में उसके सामने कोई टिक नहीं पाता था।

बलवाना को कोई संतान नहीं थी। बीस बरस से अधिक हो गए थे शादी के। क्या-क्या नहीं किया! किसकी-किसकी बात नहीं मानी! मेहरारू को कितनी बार बंगाली डाकडर कलकत्ता वाले को दिखाया, कितनी दवाई खिलाया, कर्ज भी हो गया पर सूनी गोद नहीं भरी तो नहीं। अंत में गाँव के ही पंडित रासबिहारी सुकुल से झाड़-फूँक कराने पर पैंतीस पार की उमर में उनकी दुलहिन सतवन्ता के बिटिया पैदा हुई। इतने जतन के बाद पैदा होने के कारण बलवाना ने उसका नाम दुलारी रख दिया वैसे सुकुल पंडित ने सावन के महीने में पैदा होने के कारण उसका नाम सावनी रखा था।

लोग कहते थे की सुकुल बाबा बलवाना की बिटिया को बहुत मानते थे। गाँव में या अगल-बगल के गाँव में कथा बांचने पर जो फल या मावा मिलता था उसमे से आधा, बलवाना के घर की तरफ से जानबूझ कर कोई न कोई बहाना बना कर आते-जाते, उसके हाथ में थमा देते थे। सुकुल जी के कहने पर ही बलवाना ने उसका नाम गाँव के स्कूल में लिखवा दिया था। कापी-किताब का जुगाड़ भी वही कर दिए थे पर तीसरी फेल होने के बाद पढाई रुक गई क्योकि वह हेड मास्टर डेरावन राम की बांस की लमकी छडी से पिटाई के डर के मारे स्कूल नहीं गई तो नहीं गई।

बारह बरस की उमर में ही दुलारी सोलह की दिखने लगी थी। नैन-नक्श और लम्बान सुकुल जी की बड़की बिटिया की तरह। सोलह पार की थी कि सुकुल बाबा की मध्यस्थता से उसका विवाह अतवरिया के बड़े भाई खेलावन से हो गया था जो ठाकुर सुरेन्द्र बहादुर सिंह के कारिन्दा कालू का सहायक भी था।

...और दुलारी को जब बिटिया हुई तो सुकुल बाबा ने उसके अन्नप्राशन में यह कहते हुए दक्षिणा नहीं ली कि कही गाँव की बिटिया की बिटिया का अन्नप्राशन कराने पर भी दक्षिणा ली जाती है! उस समय कहार टोला, लोहार टोला तथा अहीर टोला की औरतें सुकुल बाबा के इस बड़प्पन पर एक दूसरे के कान में बड़ी देर तक बोलती रही थीं।

दुलारी की सास सुघरा की भी अपनी बिरादरी में बहुत इज्जत थी क्योकि वह हवेली में काम करती थी और जमींदार साहब से आँख मिलाकर छोटी-बड़ी बात भी कर लेती थी।

अतवरिया की गोराई, आँख, नाक और ठोढी की बनावट जमींदार साहब से बहुत मिलती थी। गाँव की औरतें दबी जबान आपस में इस बावत कभी-कभार काना-फूसी भी कर लेती थीं पर खुलेआम कुछ नहीं।

कुंवर ज्ञानेंद्र ने देखा अतवरिया अब भी सुबके जा रही थी। आंसुओ की मोटी धार गालों पर से नीचे बह कर आँचल को गीला करने हेतु अस्थाई रास्ता बनाये हुए थी। उन्होंने दूर खड़े कालू को आवाज दी, कालू! वह हँसिया जो तुम्हे खलिहान के पास रास्ते में गिरा मिला था, इधर मुझे देना।

कालू से हँसिया लेने के बाद अतवरिया को दिखाते हुए कुंवर साहब ने पूछा क्या यही तुम्हारा हँसिया है? क्या फर्क पड़ता है, अतवरिया के हाथ में हँसिया देते हुए हँसिया की तरह अर्द्ध चंद्राकार हुई कुंवर साहब की अंगुलियों ने पहले अतवरिया की अंगुलियों को छुआ या अतवरिया की अगुलियों ने पहले कुंवर साहब की अगुलियों को! मगर फर्क यह पडा कि हँसिया पाते ही जैसे नवों निधि मिल गई हों, अतवरिया की एक आँख हँसिया पर झुकी थी तो दूसरी कृतज्ञता में कुंवर साहब की तरफ उठी। उसके होंठ हौले से हिले, आंसुओं की बरसात में मंद मुस्कान की बिजली कौंध गई ...और इसके साथ ही एक दृश्य कौंध गया कुंवर साहब की आँखों में भी।

तीन महीने पहले की बात है। धान की रोपाई चल रही थी। पचास-साठ औरतें घुटने के ऊपर धोती बांधे पानी भरे खेत में कमर के बल झुकी हुई, "रिम-झिम बरसत पनियाँ, आवा चलीं धान रोपै धनियाँ..." गाती हुई रोपनी कर रही थी।

कुंवर ज्ञानेंद्र सिंह को कल इलाहाबाद वापस जाना था, इसलिए कारिन्दा कालू और उसके सहयोगी दुलारी के आदमी खेलावन को लेकर खेत की तरफ रोपनी देखने चले आये थे। इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद हिन्दी साहित्य, दर्शन शास्त्र और समाज शास्त्र विषय लेकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. कर रहे कुंवर साहब अपने उम्र के आस-पास के जमीदार-पुत्रों से थोड़ा अलग थे। न अकड़, न अहंकार, सभी की सुन लेना, सभी से बोल लेना... यहाँ तक कि पिछले साल धान की मड़ाई के समय एक रात नौकरों के साथ खलिहान में पुआल की कोठी में रखवाली करने वालों के लिए बनाई गई सोने की जगह में ही सो गए थे।

अपने नए वाले मैसी फार्ग्यूसन ट्रेक्टर में तो जैसे उनके प्राण बसते हों। जब से उसे चलाना सीखा था, घर पर हों और उसे खुद पोछ-पाछ कर एक बार न चलाये, ऐसा नहीं हो सकता था।

....उनके खेत पर आने पर थोड़ी देर के लिए रोपनी कर रही औरतों का गाना बंद हो गया।

कुंवर साहब ने कहा तुम लोगों ने गाना क्यों बंद कर दिया? कितना भाव पूर्ण गीत है- "रिम-झिम बरसत पनियाँ, आवा चलीं धान रोपै धनियाँ..." उन्होंने आगे कहा एक गीत और सुनाओ कल हम इलाहाबाद चले जायेंगे।

....और दुलारी को तो जैसे मौका मिल गया। हाँ! हाँ! कुंवर बाबू कल शहर वापस जाने वाले है, आँखें शरारत में नचाते हुए उसने ननद अतवारी से चुहलबाजी की। इन्हें जाने से पहले एक गीत तो सुना दो ननद जी!

कुंवर बाबू! आप जानते है कि नहीं, हमारी ननद का गला गाँव में सबसे अच्छा है, बाहर से भी और भीतर से भी।

...और रोपनी कर रही महिलाओं के बीच अलग सी दिख रही अतवारी के गले पर कुंवर की नजर जैसे गड गई। इसी वर्ष तो वह अठारह की हुई थी। अंग्रेजी मेमों को अँगूठा दिखाता गोरा रंग, नाजेरियन नारी जैसा कसा बदन और यूनानी सुन्दरी सा नैन-नक्श। हाथ-पैर कीचड़ में सने रोपनी करने के लिए झुकी पानी के रंग की धोती में ढँकी देह पर कुंवर साहब की नजर गले से जरा सा नीचे

क्या उतरी, अज्ञेय की ये पंक्तियाँ "Beneath the glowing throat the breast half globed, like folded lilies deep set in stream" जैसे जीवंत हो उठी।

क्या देख रहे हो कुंवर बाबू, दुलारी का सवाल... कुंवर को ऐसा लगा जैसे चोरी पकड़ ली गई हो पर उसका दूसरा वाक्य सुन कर उन्होंने राहत की साँस ली।

दुलारी एक तीर से तीन शिकार कर रही थी। ननद से मजाक, अपने मरद पर वाचाल होने का जादू और दूसरी बेचारी अनपढ़ औरतों के बीच कुंवर साहब से खड़ी भाषा में बात करके अपने को उनसे बीस जताना।

दुलारो बोलीं, कुंवर बाबू! अतवारी तभी गायेंगी जब उनसे आप खुद कहेंगे। कुंवर ज्ञानेंद्र ने, दुलारी की शरारत को न समझते हुए, बड़े सहज भाव से कहा, अतवारी! अपनी भौजी की बात रख लो, अब एक गीत सुना ही दो।

अतवारी ने एक आँख खेत में गड़ाये और दूसरी हलके से कुंवर की तरफ उठाये होठों को हिलाया...और बताशा से बोल तथा शहद से भाव कुंवर ज्ञानेंद्र के कानों से होते हुए दिल तक उतर गए थे-

"अब क गयल कब अइबा हो ननद के भैया"।

•

कैंसर व्याधि (Cancer Disease) में जीन्स (Genes) का महत्व

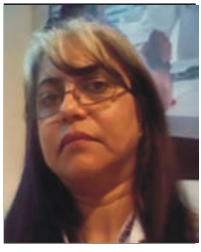

– **डॉ. ज्योति बाजपाई दीक्षित,** पीएच.डी.
मो.: 9717055447

कैंसर व्याधि में जीनोमिक प्रोफाइलिंग (Genomic Profiling) का क्या महत्व है, इसको हम एक संवादात्मक लेख के माध्यम से समझने की कोशिश करेंगे।

प्रश्न-1: ऑन्कोलॉजी क्या है?

उत्तरः ऑन्कोलॉजी चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा है, जो कैंसर के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कराती है। कैंसर में शामिल विभिन्न पहलू हैंः रोकथाम (Prevention), जाँच (Diagnosis), उपचार (Treatment) और देखभाल (Palliation)।

रोकथाम (Prevention): जीवनशैली में बदलाव लाकर, टीकाकरण करके, कैंसर का कारण पता लगाकर, स्क्रीनिंग के द्वारा, या कैंसर होने की संभावना की पूर्वसूचना के माध्यम से कैंसर होने से पहले ही उससे बचाव करने के लिए की जाने वाली कार्रवाई को रोकथाम के रूप में जाना जाता है।

परीक्षण (Diagnosis): कैंसर के कारण और प्रकार की पहचान, चिकित्सीय इतिहास (Medical History), शारीरिक परीक्षण (Physical Checkup), नैदानिक परीक्षण (Diagnosis), इमेजिंग परीक्षण (Radiological Scans), प्रयोगशाला परीक्षण (Laboratory Tests), बायोप्सी (Biopsy), पैथोलॉजी परीक्षण (Pathology Tests), स्टेजिंग (Staging), आणविक परीक्षण (Molecular Tests) और जेनेटिक परीक्षण (Genetic Tests) के माध्यम से की जा सकती है।

उपचार (Treatment): शरीर में कैंसर कोशिकाओं को नियंत्रित करने या शरीर से कैंसर कोशिकाओं को खत्म करने के उद्देश्य से किए जाने वाले प्रयासों को कैंसर के उपचार के रूप में जाना जाता है। कैंसर उपचार प्रकारों में शामिल हैंः सर्जरी (Surgery), कीमोथेरेपी (Shemotherapy), विकिरण थेरेपी (Radiation

Therapy), इम्यूनोथेरेपी (Immunotherapy), हार्मोन थेरेपी (Hormone Therapy) और लक्षित थेरेपी (Targeted Therapy)।

देखभाल (Pailiation): शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं को संबोधित करके रोगी और उनके परिवार दोनों के लिए जीवन के स्तर में सुधार करना भी कैंसर विज्ञान की एक शाखा है। देखभाल में शारीरिक पीड़ा, लक्षण नियंत्रण, मनोवैज्ञानिक सहायता, निर्णय लेने में सहायता, पोषण संबंधी सहायता, समन्वय सहायता, और आध्यात्मिक सहायता प्रदान की जाती है।

प्रश्न-2: कैंसर क्या है?

उत्तर: कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसमें शरीर में असामान्य कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि और प्रसार होता है। आम तौर पर, शरीर में कोशिकाएं नियंत्रित तरीके से बढ़ती हैं, विभाजित होती हैं और समाप्त हो जाती हैं। कैंसर में, असामान्य कोशिकाएँ बढ़ती हैं और बिना रुके विभाजित होती हैं, जिससे ट्यूमर बनता है। सामान्य (Normal or Benign) ट्यूमर कैंसरग्रस्त नहीं होते हैं और शरीर में फैलते नहीं हैं जबकि हानिकारक (Harmful or Malignant) ट्यूमर कैंसरग्रस्त होते हैं और शरीर में अनियंत्रित रूप से बढ़ते हैं।

प्रश्न-3: कैंसर में जीन्स और जेनेटिक परिवर्तन की क्या भूमिका है?

उत्तर: कैंसर में जीन और जेनेटिक परिवर्तन प्रमुख भूमिका निभाते हैं। हमारा मानव शरीर कोशिकाओं (Cells) से बना होता है, कोशिकाओं में केन्द्रक (Nucleus) होता है; केन्द्रक के अंदर गुणसूत्र (Chromosomes) होते हैं, जिनमें जीन्स (Genes) होती हैं। जीन्स डीएनए (DNA) का खंड होती हैं। डीएनए चार न्यूक्लियोटाइड आधारों (Nucleotide Bases) से बना होता है- एडेनिन (Adenine)- A, थाइमिन (Thymine)- T, साइटोसिन (Cytosine)- C, और गुआनिन (Guanine)- G। इन अणुओं, ATGC, का अनुक्रम जेनेटिक जानकारी को जीन्स मैं कोडित करता है। हमारे मानव शरीर में 20000 से अधिक जीन्स हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से मानव जीनोम (Human Genome) के नाम से जाना जाता है। Human Genome के लिए एक स्टैण्डर्ड कोड (Standard Code) है, जिसे रेफेनेन्स ह्यूमन जीनोम (Reference Human Genome) माना जाता है। जब भी इस स्टैण्डर्ड रेफेरेंस जीनोम में कोई परिवर्तन होता है, तो हम जेनेटिक विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं। कैंसर एक जेनेटिक विकार है। जीन्स में होने वाले

परिवर्तनों को जेनेटिक परिवर्तन (Genetic Alterations) या उत्परिवर्तन (Mutations) के नाम से परिभाषित किया जाता है।

प्रश्न-4: जेनेटिक परिवर्तन कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर: कैंसर से संबंधित जेनेटिक परिवर्तन के दो मुख्य प्रकार हैं: वंशानुगत परिवर्तन (Germline Alterations) और दैहिक परिवर्तन (Somatic Alterations)

पहले प्रकार में, कुछ व्यक्तियों को अपने माता-पिता से आनुवंशिक उत्परिवर्तन (Hereditary Mutations) विरासत में मिलते हैं। ये वंशानुगत उत्परिवर्तन (Germline Mutations) मानव में वंशानुगत कैंसर (Inherited Cancers) के होने की संभावना को बढ़ा सकते हैं।

दूसरे प्रकार में, किसी व्यक्ति के जीवनकाल के दौरान उसके डीएनए में जेनेटिक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों को दैहिक उत्परिवर्तन (Somatic Alterations) या अर्जित उत्परिवर्तन (Acquied Mutations) के नाम से जाना जाता है। दैहिक परिवर्तन वातावरण कारकों के परिणामस्वरूप हो सकते हैं, जो समय के साथ शरीर में जमा होते जाते हैं, और कैंसर का कारण बन सकते हैं।

प्रश्न-5: कैंसर की देखभाल में जीनोम की रूपरेखा (Genomic Profiling) की क्या भूमिका होती है?

उत्तर: कैंसर में, जीनोमिक प्रोफाइलिंग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जीनोमिक प्रोफाइलिंग की पहली उपयोगिता कैंसर रोगियों के उपचार की उपयुक्त योजना बनाने में होती है। हर व्यक्ति का जीनोमिक प्रोफाइल भिन्न होने के कारण हर इंसान का कैंसर भी अलग होता है। कैंसर के लिए वैयक्तिक थेरेपी (Personalized Medicine), सुनिश्चित औषधि (Precision Medicine) या लक्षित थेरेपी (Targeted Therapy) का उद्देश्य किसी व्यक्ति के कैंसर की अलग या भिन्न जीनोमिक प्रोफाइल के आधार पर उपचार के तरीकों को अपनाना है।

जीनोमिक प्रोफाइलिंग वंशानुगत उत्परिवर्तन (Hereditary Mutations) के बारे में भी जानकारी प्रदान करती है। ये उत्परिवर्तन उन जीन्स में मिलते हैं, जो कैंसर के लिए संवेदनशील जीन्स (Cancer Susceptibility Genes) मानी जाती हैं। इन जीन्स में मिलने वाले वंशानुगत उत्परिवर्तनों से कुछ प्रकार के कैंसर विकसित होने का संभावना बढ़ सकती है।

प्रश्न-6: जेनेटिक परीक्षण (Genetic Testing) क्या है?

उत्तरः जेनेटिक टेस्टिंग द्वारा जीन्स में होने वाले परिवर्तनों को जाँचा जा सकता है। जेनेटिक टेस्टिंग में किसी व्यक्ति के डीएनए और आरएनए का विश्लेषण करना शामिल होता है।

जेनेटिक टेस्टिंग जीन्स में उन परिवर्तनों को ढूँढ़ने करने में मदद करती है, जो बीमारी या रोग का कारण बन सकते हैं। जेनेटिक टेस्टिंग हमें आनुवंशिक कैंसर की पूर्व सूचना देने में, कैंसर के रोगियों का इलाज करने, लोगों में कैंसर की रोकथाम के लिए, और कैंसर का निदान करने के लिए सूचना प्रदान करती है।

विज्ञान के नवीन शोधों के परिणामस्वरूप अब हमारे पास जेनेटिक टेस्टिंग करने की अत्याधुनिक तकनीक है, जिसे हम नेक्स्ट जनरेशन सिक्वेंसिंग (Next Generation Sequencing) या NGS कहते हैं। ये तकनीक हमें किसी भी व्यक्ति का अलग और भिन्न जीनोमिक प्रोफाइल को कम समय में और कम खर्चे में पता करने में मदद करती है।

प्रश्न-7: जेनेटिक काउन्सलिंग (Genetic Counseling) क्या है और जेनेटिक काउंसलर (Genetic Counselor) कौन होता है?

उत्तरः जेनेटिक काउन्सलिंग या परामर्श एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लोगों और उनके परिवारों को जेनेटिक विकारों के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी प्रदान करना शामिल है। जेनेटिक काउंसलर या परामर्शदाता उन्हें जेनेटिक विकारों के परीक्षण और उपचार में जेनेटिक्स के योगदान के चिकित्सीय, मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक निहितार्थों को समझने मैं मदद करते हैं।

जेनेटिक टेस्टिंग की प्रक्रिया में, जेनेटिक काउंसलर टेस्ट के पहले प्री-टेस्ट जेनेटिक काउंसलिंग के माध्यम से और परीक्षण के परिणाम आने के बाद पोस्ट-टेस्ट जेनेटिक काउंसलिंग के माध्यम से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जेनेटिक काउंसलर लोगों और उनके परिवारों को विभिन्न जेनेटिक विकारों और स्थितियों के आनुवंशिक अवयवों को समझाते हैं। वे आनुवंशिक परीक्षण, विकार होने की संभावना और संभावित निवारक उपायों के बारे में लोगों को सूचित निर्णय (Informed Decision) लेने में मदद करते हैं।

जेनेटिक कॉउंसलिंग या परामर्श एक प्रमाणित जेनेटिक काउंसलर या परामर्शदाता द्वारा प्रदान किया जाता है, जिसके पास आनुवंशिक परामर्श में विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण होता है।

प्रश्न-8: उपरोक्त प्रश्नों और उत्तरों का सार क्या है?

उत्तर: कैंसर या किसी भी बीमारी के लिए, उपयुक्त निदान सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। कैंसर के मरीज जेनेटिक रूप से एक-दूसरे से विविध होते हैं। इसलिए, प्रयोगशालाओं को नियमित निदान से आगे बढ़ने और साक्ष्य-आधारित सुनिश्चित औषधि (Evidence Based Precision Medicine) के परीक्षणों को प्रदान करने की आवश्यकता है, जो कैंसर विशेषज्ञों (Oncologists) को रोगियों के लिए व्यक्तिगत चिकित्सा (Personalized Medicine) निर्धारित करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

NGS या नेक्स्ट जनरेशन सिक्वेंसिंग (Next Generation Sequencing) की तकनीक के प्रावधान वाली प्रयोगशालाएँ कैंसर रोगियों और उनके परिवारों के लिए ऐसे जेनेटिक परीक्षणों को उपलब्ध, किफायती और सुलभ बनाकर के सामाजिक आवश्यकताओं को व्यापक रूप से सम्बोधित करने के लिए कटिबद्ध हैं।

यही नहीं, जेनेटिक काउंसलर या परामर्शदाता सभी प्रकार के विकल्पों पर सावधानीपूर्वक विचार करके और परीक्षण से पूर्व और परीक्षण के पश्चात जेनेटिक काउन्सलिंग या परामर्श के माध्यम से संभावित परिणामों का विचारशील विश्लेषण करके लोगों को शिक्षित करने में और सूचित निर्णय (Informed Decision) लेने में मदद करते हैं।

मैं, ज्योति, एक, प्रशिक्षित और प्रमाणित जेनेटिक काउंसलर हूँ। मेरे इन आठ प्रारंभिक प्रश्नोतरिक एकालापों के बाद, क्या आप मुझसे इस विषय में आगे और वार्तालाप करना चाहेंगे?

•

श्रद्धांजलि

इस वर्ष जिनकी जन्मशती है
पिता को पुत्र का स्मृति नमन

स्व. यू.डी. शुक्ल
(मार्च 1924—15 जुलाई 1988)

शिव की नगरी काशी

हमारा सारा शुक्ल परिवार शिव-भक्त रहा है। जब मेरे पिता का कानपुर से बनारस स्थानांतरण हुआ, हम सब विभोर हो गये। सबने बताया कि बनारस की अपनी अलग मस्ती है, एक अलग कल्चर है। मेरे पिता बहुत ही जिंदादिल और सोशल व्यक्ति थे। परंतु बनारस में दो महीने में ही उनका मन ऊब गया। मैंने यह बात अपने बनारसी मित्र से शेयर की। उसने कहा "पार्टनर, चाचा जी (तब अंकल नहीं होते थे) से मेरी तरफ से हाथ जोड़कर कह दो कि किसी भी तरह छः महीने बनारस में गुजार लें। गंगा कसम फिर जीवन भर कभी न तो काशी चाचा जी को छोड़ेगी और न ही चाचा जी काशी छोड़ पायेंगे।"

यकीन मानिये कि बिलकुल ऐसा ही हुआ।

मैं लगभग छः महीने बाद परिवार से मिलने पहली बार कानपुर से बनारस गया। अगले दिन सूर्योदय के पहले ही पिता जी हम सबको लेकर गंगा-स्नान और बाबा विश्वनाथ के दर्शन हेतु ले गये। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मेरे पिता गंगास्नान के बाद केवल धोती पहने माथे पर तिलक लगाये, नंगे पैर, उघारे

बदन माँ अन्नपूर्णा व बाबा विश्वनाथ के दर्शन हेतु चल पड़े। मैंने माँ से आश्चर्य से पूछा हमेशा अपटुडेट, वेलड्रेस्ड रहने वाले पिताजी को क्या हो गया?

माँ ने हँसते हुये कहा "बाबा विश्वनाथ की कृपा है।"

मेरे पिता का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। बंगाली स्टाइल की धोती, माथे पर त्रिपुंड, नंगे बदन पर जनेऊ, कुल मिलाकर उनकी भव्य आकृति की वजह से रास्ते में सामने से आने वाले लोग उन्हें प्रणाम कर मार्ग दे देते। बाबा के दरबार में उन्हें देखते ही वहाँ के पुजारी ने उन्हें प्रणाम करते हुये आगे बुलाकर सबसे पहले उन्हें पूजा का अवसर दिया।

उसके बाद हम घर जाने की जल्दी में कार में बैठ कर पिताजी का इंतजार करने लगे। अगला दृश्य मेरे लिए 'शॉकिंग' था। विश्वनाथ गली की फेमस कचौरियों की टोकरी एक हाथ में और दूसरे हाथ में गरमा-गरम इमरतियों का पैकेट लेकर पिताजी अवतरित हुये (वह अपनी पोस्टिंग के शहर में स्वयं खरीदारी नहीं करते थे)।

उनका यह सिलसिला लगातार उनके चार वर्ष के काशी-प्रवास में चलता रहा।

सेवानिवृत्ति के बाद भी वह हर अन्नकूट के दिन माँ अन्नपूर्णा की स्वर्ण[1]मूर्ति के सामने दुर्गा-पाठ करने नियमित रूप से लखनऊ से काशी जाते थे। कभी अनायास ही वह माँ को लेकर बाबा के दर्शन करने चले जाते। पूछने पर कहते "मुझे माँ अन्नपूर्णा और बाबा से शक्ति मिलती है। वहाँ मेरी बैटरी चार्ज हो जाती है।"

उनका यह 'बैटरी चार्ज' करने का सिलसिला निरंतर तब तक चलता रहा। और... 15 जुलाई सन् 1988 को वह 'ऊर्वारुकमिव' शिवलीन हो गये। ॐ

हर हर महाऽऽदेव

1. माँ अन्नपूर्णा की प्रस्तर मूर्ति के दर्शन हर दिन होते थे, किन्तु माँ की स्वर्ण-मूर्ति दर्शन के लिए केवल अन्नकूट के दिन ही वहाँ के पुजारियों और विशिष्ट परम भक्तों के लिए के लिए निकाली जाती थी।

जो इच्छा करिहौ मन माहीं। प्रभु प्रताप कछु दुर्लभ नाहीं।।

मानस की यह चौपाई श्री शुक्ल जी के जीवन का मूल मंत्र रही है। यह पंक्तियाँ नेपोलियन की उक्ति "Nothing is impossible in the world" का विशुद्ध भारतीयकरण है। इस मूल मंत्र में स्वप्न, संकल्प और संघर्ष के साथ सफलता के लिये भगवत् कृपा भी सम्मिलित है। भगवत् कृपा तभी होगी जब संकल्प कल्याणकारी हो। शुक्ल जी के जानने वालों का मानना है कि उन्होंने जिस कार्य में हाथ डाला वह पूर्ण अवश्य हुआ। इन कार्यों में अधिकतर परहित थे।

रायबरेली के एक युवा पत्रकार ने उनके जीवन में ही टिप्पणी की थी कि शुक्ल जी के पास जब कोई कार्य लेकर जाता है तो 75 प्रतिशत कार्य उनके स्वयं के प्रभाव एवं प्रयास से सम्पन्न हो जाते हैं बाकी 20 प्रतिशत के लिये वह रास्ता सुझा देते थे। बाकी बचे 5 प्रतिशत जो सम्पन्न नहीं हो पाते उन पर शायद भगवत् कृपा नहीं होती थी।

बचपन में पिता के कठोर अनुशासन के कारण अनुशासित रहने के आदी थे। साकेत महाकाव्य का 'पंचवटी' सर्ग इन्हें कण्ठस्थ था। बड़े सुन्दर स्वर में उसका पाठ करते थे। क्यों न हो इनके परिवार पर लक्ष्मी और सरस्वती की पूर्ण कृपा थी। पूरे परिवार में काव्यमय वातावरण था। अतएव खुद भी छोटी-मोटी रचनायें बचपन से लिखते थे। 20 वर्ष की उम्र में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.बी. पास किया। अगले चार वर्षों तक रायबरेली में ही वकालत की और ए पी ओ के रूप में भी कार्य किया।

सन् 1949 में जुडिशियल मैजिस्ट्रेट बनकर पहली तैनाती शाहजहाँपुर हुई। शाहजहाँपुर में सन् 52 में उन्हें प्रतिनियुक्ति पर डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग आफिसर बनाया गया। प्लानिंग आफिसर जिले के सभी विकास कार्य के लिये उत्तरदायी होता था जो कार्य आजकल सी डी ओ के जिम्मे है। शाहजहाँपुर जनपद में यहाँ 49 से 57 तक रहे। इस कार्यकाल में शाहजहाँपुर जनपद विकास कार्यों में कई बार प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहा।

सम्भवतः न्यायिक सेवा में श्री शुक्ल जी ही ऐसे अधिकारी थे जिनको स्वच्छ छवि की वजह से अपने गृह जनपद में कार्य करने का मौका मिला। आपने उत्तर प्रदेश में केवल आगरा को छोड़कर बाकी सभी कवाल टाउन में ए डी एम जे, सी जे एम और अतिरिक्त जनपद न्यायाधीश के पद पर कार्य किया। राजधानी लखनऊ में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच में अतिरिक्त रजिस्ट्रार

के पद पर भी कार्य किया और 31 मार्च 1983 को कार्यवाहक जनपद न्यायाधीश बाराबंकी के पद से सेवानिवृत्त हुए। बाराबंकी शुक्ल जी की जन्मस्थली भी थी।

सेवानिवृत्ति के बाद लगभग 5 साल तक हाईकोर्ट में प्रैक्टिस की तथा आई. टी.आई. रायबरेली के हाईकोर्ट में स्थायी अधिवक्ता भी रहे।

आजीवन अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति इनका अत्यधिक लगाव था। छोटे भाइयों और एकलौती बहन के लिये वात्सल्य की अनुभूति रखते थे। वह सब भी इन्हें पितृतुल्य सम्मान देते थे। भाइयों में इतना सौहार्द अमूमन कम पाया जाता है।

जीवनपर्यन्त अपने पिता के आज्ञाकारी रहे। शायद ही ऐसी कोई पिता की इच्छा हो जो इन्होंने पूर्ण न की हो। सन् 52 में इनके पिता को हाई ब्लड प्रेशर हुआ तो उनके इलाज के लिये वह शाहजहांपुर से आकर लखनऊ के प्रख्यात फिजिशियन डा. नाटू को लेकर रायबरेली आते थे। लगभग एक वर्ष के बाद पिता को स्वास्थ्य लाभ हुआ। कठिन जुडिशियल मसलों पर इनके पिता जो कि स्वयं जिला जज रह चुके थे इनका मार्गदर्शन करते थे। पिता की मृत्यु के बाद भी जब शुक्ल जी किसी परेशानी में होते थे तो इनके पिता स्वप्न में मार्गदर्शन देते थे। ऐसी अटूट निष्ठा थी इनकी अपने पिता पर।

श्री शुक्ल जी बाबा विश्वनाथ माँ अन्नपूर्णा एवं उज्जैन के महाकाल जी के अनन्य भक्त थे। जब भी मौका मिलता तो इन देवालयों में जाकर अपने को पुनः स्फूर्त एवं ओजस्वी महसूस करते थे। अक्टूबर 87 में अन्तिम बार महाकाल के दर्शन करने उज्जैन गये। उसके साल भर के अन्दर ही 15 जुलाई 88 को अपने पुत्र के बलरामपुर अस्पताल स्थित आवास पर गये। अस्पताल में कार पार्क करने के बाद रास्ते में श्री आर.पी. अवस्थी एडवोकेट व कुछ परिचित डाक्टरों से बात की। परन्तु पुत्र के आवास के थोड़ा पहले ही मूर्छित हो गये तथा 'उर्वारुकमिव' जीवन और मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो गये। गहन चिकित्सा कक्ष की सुविधा, अस्पताल के सभी विशेषज्ञ यहाँ तक कि स्वयं उनका डाक्टर पुत्र भी उन्हें नहीं बचा सके।

सत्य है बीमारी का इलाज है मृत्यु का नहीं। ईश्वर ऐसी सुन्दर मृत्यु बिरले लोगों को ही प्रदान करता है।

श्रद्धावनत पुत्र

डा. डी.एस. शुक्ल

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for lifemembership of Kanyakubj Sabha &/ or Kanyakubj Vaani magazine

1. **Name of Member:** .....
2. **Age:** .....
3. **Gotra:** .....
4. **Father's/Husband's Name :**.....
5. **Address :** .....
   .....
6. **landline/Mobile No.:** .....
7. **Email :** .....
8. **Name of spouse / Father'sName :**.....
9. **Education :** .....
10. **Occupation (Post/Designation) :**.....

	Unmarried Children	Name	Age	Education	Job
a)	.....				
b)	.....				
c)	.....				

11. **Any other information :**

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubj Pratinidhi Sabha &/or Kanyakubj Vaani** and Willing to pay Rs.....in Cash/Cheque No. .....Name of Bank.....favouring *"Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratindhi Sabha, Lucknow"Payable at Lucknow.*

12. **Name of person introducing :** .....

Date : **(Signature)**

.....✂.....✂.....✂.....

Reciept

Received with thanks Rs. .....in Cash / Cheque No. .....Name of Bank ..... from .....who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinibhi Sabha & / or Kanyakubj Vaani.**

(Signature)

1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha is Rs. 1100/- (A/c.No. 200386409620, IFSC Code- IDBI000H561, Indian Bank,Hazratganj, Lucknow). Account of Akhil Bharatiya Sri Kanyakubj Pratinidhi Sabha.**
2. Contribution for life membership of **Kanyakubja Vaani is Rs. 1100/- , Vishishta Member: Rs. 2000/- (A/c. No.77140100006054, IFSC Code- BARB0VJHAZR, Bank of Baroda, Hazratganj branch, Lucknow). Form & cheque to be sent to Sri AK Tripathi, Haider Mirza Lane, Golaganj, Lucknow.**
3. Contribution for one issue of **Kanyakubja Vaani is Rs.40/-+ postage charges.**

होली मिलन–2023 की झलकियाँ

कान्यकुब्ज रत्न अश्वनी बाजपेयी

कान्यकुब्ज रत्न गायत्री शर्मा

कान्यकुब्ज रत्न डॉ. अंशुमन पांडे

कोकिल कण्ठ अनुराधा जी

ननद-भाभी ग्रुप

साइकिल के साथ छात्रायें

मेघदूत
क्या आपको
DIABETES है?
शुगर प्रबन्धन
मे सहायक
मधुशून्य
चूर्ण
शिलाजीत
नीम
जामुन
गुणमार
करेला
तुलसी
अश्वगन्धा
मेघदूत
मधुशून्य
चूर्ण
Khadi India
मधुमेह को नियन्त्रित करने की आयुर्वेदिक औषधि
Madhu
Shoonya
(मधुशून्य)
मेघदूत
Madhu
Shoonya
Ayurvedic
Proprietary Medicine
To Control Diabetes
मेघदूत मधुशून्य
चूर्ण व टेबलेट
मधुशून्य चूर्ण व टेबलेट मधुमेह (डायबिटीज) का प्रबन्धन करने के साथ-साथ अनियमित रक्तचाप और हृदय दुर्बलता को दूर करने मे सहायक है साथ ही शरीर को नवस्फूर्ति भी प्रदान करता है।
AVAILABLE ON:
amazon
Flipkart
mall
1mg
Helpline: 9235623142 I www.meghdootherbal.com I email: info@meghdootherbal.com